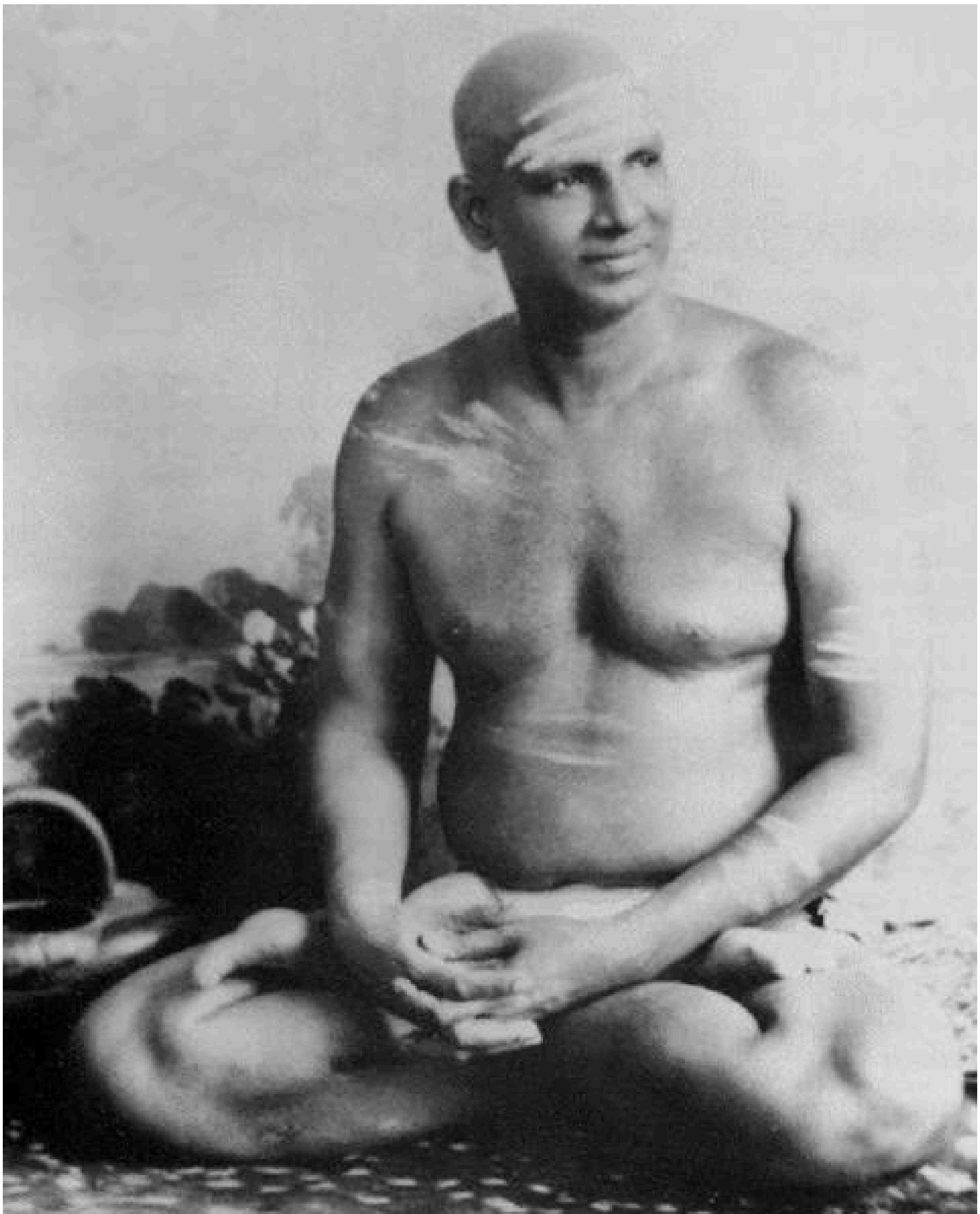
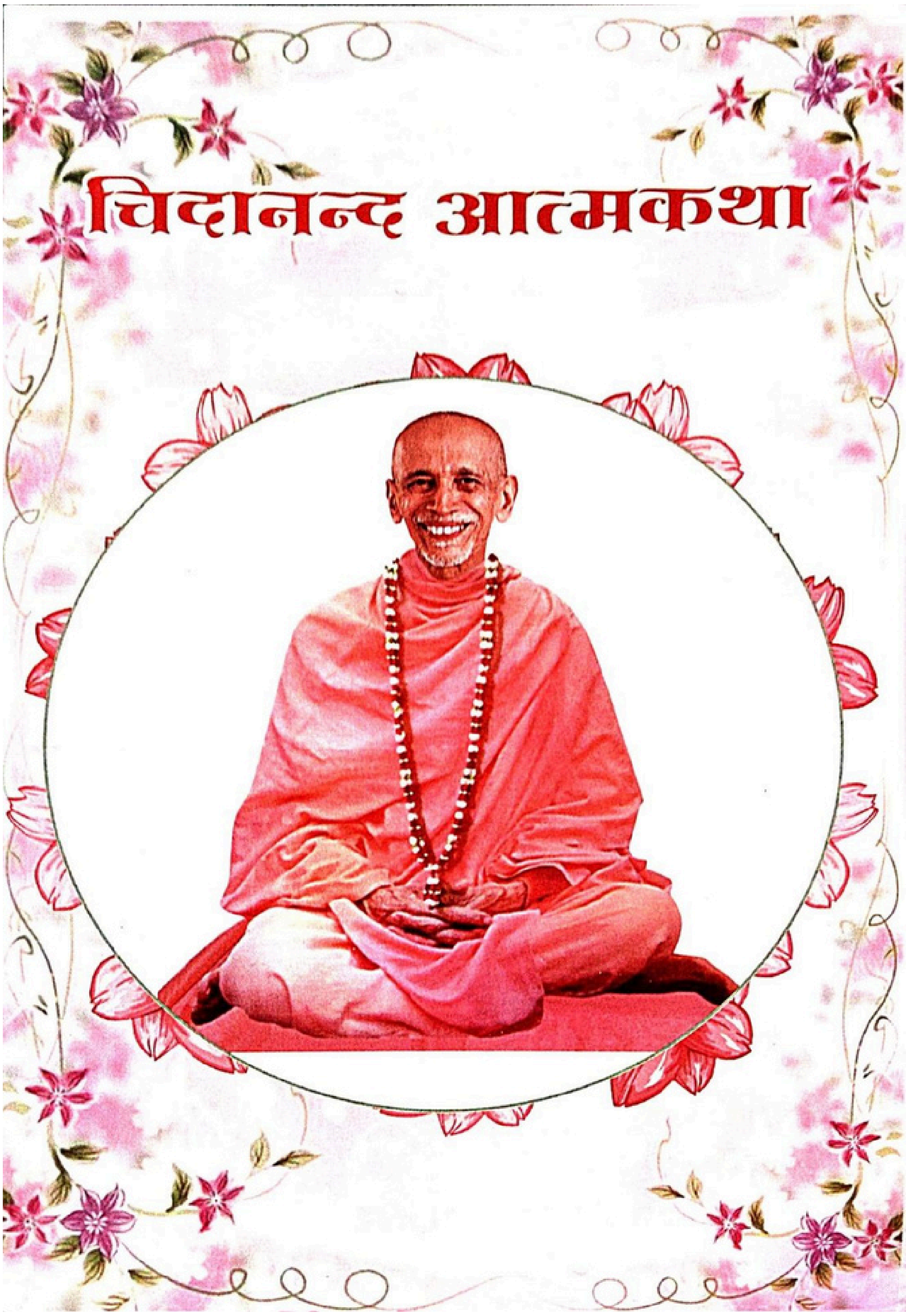



चिदानन्द आत्मकथा

चिदानन्द आत्मकथा

Autobiography पुस्तक का चिन्दी अनुवाद

सादर पे्रमापपण जन्म चदवस २४ चसतम्बर २०२४

भावानुवाचदका

स्वामी श्रीचप्रयानन्द माताजी

प्रकाशक

द चिवाइन लाइफ सोसायटी

पत्रालय : चशवानन्दनगर- २४९१९२

चजला : चटिरी गढ़वाल, उत्तराखण्ड (चिमालय),

भारत www.sivanandaonline.org, www.dlshq.org

प्रथम चिन्दी संस्करण २०२४ (५०० प्रचतयाँ)

द चिवाइन लाइफ टरस्ट सोसायटी

HC-07

PRICE:₹85/-

'द चिवाइन लाइफ सोसायटी, चशवानन्दनगर' के चलए स्वामी अदै्वतानन्द द्वारा प्रकाचशत तथा उन्हीं के द्वारा 'योग-वेदान्त फॉरेस्ट एकिोमी पे्रस, पो. चशवानन्दनगर, चज. चटिरी गढ़वाल, उत्तराखण्ड, चपन २४९१९२' में मुचित ।

For onlineorders and catalogue visit: dlsbooks.org

प्रकाशकीय

परम पूज्य स्वामी चिदानन्द जी मिाराज ने, चवश्व-कल्याणाथप अचत व्यस्त रिने तथा अचत चवनीत स्वभाव के कारण चनजी अस्तस्तत्व को कभी मित्ता निीं ंदी। सद ्गुरु भगवान स्वामी चशवानन्द जी के एक सेवक रूप में िी जीवन पयपन्त रिे, इसचलए अपनी आत्मकथा लेखन की आवश्यकता समझी िी निीं।ं इस पुस्तक में स्वामीजी मिाराज द्वारा चलस्तखत कुछ आत्म-पररियात्मक एवं आत्म-कथात्मक आलेखों ंएवं पत्रों ंको अत्यन्त सुन्दर रूप में संकचलत चकया गया िै । इसमें प्रसुतुत उनके मिान जीवन- ि ररत की कचतपय झलचकयााँ चवचदत कराती िैं चक चकशोरावस्था के पूवप से िी चिन्तनशील एवं अन्तमुपखी प्रवृचत्त के कारण, अध्यात्म सम्बन्धी उत्कट चजज्ञासाएँ उनके अन्तर में समाचित थीं।ं अपने गुरु-गोचवन्द के प्रचत सवपस्व समपपण से उनमें अवचशष्ट कुछ न रिा। अिंशून्यता की इस स्तस्थचत
में केवल शेष रिा - चित -आनन्द - चिदानन्द ।

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

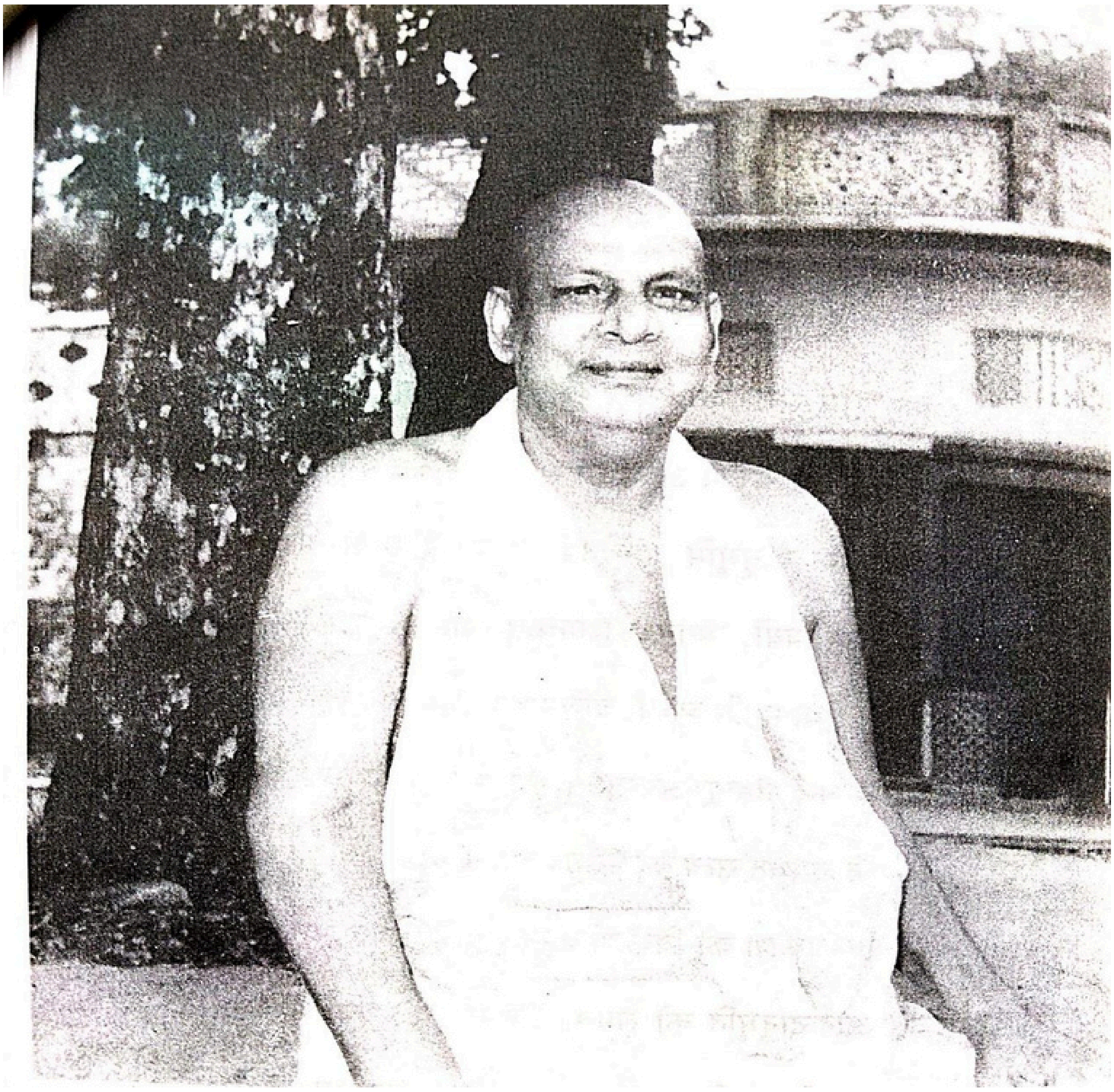
अन्तडविषय

श्रद्धा भाव पूरित

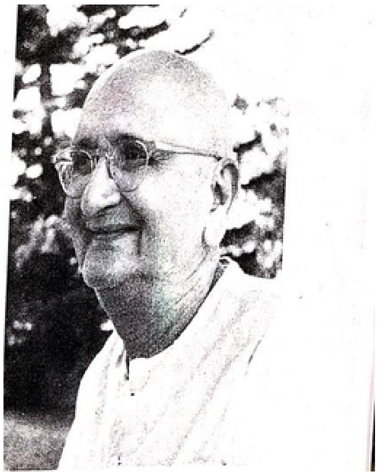


प्रणामांजचल

चदव्य परम सत्ता को सादर श्रद्धापूररत प्रणाम। इस धरती पर परमात्मा के प्रचतचनचध रूप में अवतररत सद्गुरुदेव को समादर प्रचणपात। ि मारी आध्यास्तत्मक मातृभूचम भारतवषप के पावन सन्तों–मिात्माओं,ं ऋचष-मुचनयों,ं मनीचषयों,ं
भगवदसाक्षात्कार प्राप्त ब्रह्मज्ञाचनयों,ं अन्य मिान चवभूचतयों,ं यथा मिचषप व्यास, वचशष्ठ, याज्ञवल्क्य, तथा अवापिीन
युग के अन्यान्य कई मिान आत्माओं ंको पे्रेमपूणप प्रणाम। वे मिान आत्माएँ, चजन्ोंनें शाश्वत सत्य का परमोच्च अनुभव प्राप्त कर चलया था, आध्यास्तत्मक ज्ञान-प्रकाश को चवकीणप करने तथा प्रभु की अगाध भस्ति की अवणपनीय आनन्दानुभूचत को समकालीन सन्तों–भिों ंमें प्रसाररत करने ितु जो इस धरती पर रिीं,ं उन सबके शुभाशीवापद मि सब पर िों।ं



सस्तिलन



इस लोक में दो आत्माओं ंका प्रत्यक्ष चमलन सदैव प्रारब्ध कमापनुसार िी सुचनयोचजत िोता िै। एक बार चमल लेने पर पुनः व्याविाररक संसार में उस सम्बन्ध का नैरन्तयप भी प्रारब्ध कमों के फलस्वरूप रिता िै। सनातन धमप अथवा वैचदक धमप जो चिन्दू धमप के नाम से प्रिचलत िै, उसमें इसका स्पष्टीकरण हुआ िै। संसार में मानव रूप में उत्पन्न दो जीवात्माओं ंका चमलन चभन्न-चभन्न रूपों ंमें िोता िै। सद्गुरु भगवान श्री स्वामी चशवानन्द जी के श्री िरणों ंमें मेरी आध्यास्तत्मक यात्रा सम्पन्न िोने से पूवप आनन्द-मूचतप पूज्य पापा रामदास जी से मेरा सस्तिलन एक चवचशष्ट ढंग से िी हुआ।



ॐ श्री राम

आत्म पररिय

दचक्षण भारत के पचिम समिु तटीय क्षेत्र में नदी चकनारे बसा एक नगर मंगलौर मेरी जन्मभूचम िै। विााँ पर मेरे मातामि नेलीकई वेंकटराव तथा उनकी धमपत्नी श्रीमती सुन्दरिा का चनवास स्थान था। विीं ंपर २४ चसतम्बर १९१६ को मेरा जन्म हुआ। वे दोनों ंअत्यन्त पचवत्र एवं उदारहृदय थे। चवशेषतया चनधपनों ंएवं जरूरतमन्दों ंकी मदद में सदैव तत्पर रिते थे। मेरी जननी श्रीमती सरोचजनी देवी मेरे नाना-नानीश्री की बहुत लाड़ली सुपुत्री थीं।ं कारण चक इकलौती यिी सन्तान थी, जो जीचवत रि सकी। इनके जन्म से पूवप चकतने िी पुत्र मृतुयु को प्राप्त िोते गये थे। अठ्ठाइस वषप की अवस्था में मेरी माताश्री की लौचकक यात्रा भी दैववश समाप्त िो गयी। उस समय तक वि पााँि बच्चों ंकी माता बन िुकी थीं।ं जब वि स्वगप चसधारीं,ं मेरी बड़ी बचिन िेमलता बाई ग्यारि वषप की तथा मैं नौ वषीय बालक था। अपने पररवार में जैसे माताश्री अपने जननी जनक की लाड़ली थीं,ं इसी प्रकार मैं उस पररवार का पिला पुत्र िोने के नाते सबका लाड़ला था। श्रीधर को अथापत मुझे अपनी मातामिी तथा माताश्री के ममतापूणप पारस्परिक िृदय में अचधकाचधक लाड़-प्यार चमलता रिा। इस प्रकार मैं उनकी 'आाँखों ंका तारा' बना रिा।

चपताश्री श्रीचनवास राव का पररवार मिास में रिता था। उनकी यि इच्छा

थी चक अब सब अपने घर मिास में आ जायें। मेरे मातामि तथा मातामिी ने चपताश्री से साग्रि अनुनय चवनय की; पररवार का प्रथम पुत्र िोने के कारण मेरा लालन-पालन, उच्च पढ़ाई-चलखाई मंगलौर में िी िोना समुचित रिेगा। उनकी िाचदपक लालसा-उत्कण्ठा को िृिान कर मेरे चपताश्री द्वारा सिमचत प्रदान करना अप्रत्याचशत तथा चवस्मयजनक था। इस प्रकार मंगलौर शिर में उच्च चशक्षा ग्रिण करते हुए जीवन के १६ वषप व्यतीत िो गये।

मंगलौर शिर पापा रामदास जी के चनवास स्थान कन्नगढ़ के समीपस्थ था। सन १९२३ में पापा रामदास जी का समूपूणप वषप भारत-भ्रमण में व्यतीत हुआ था। वाचपस आने पर मंगलौर शिर के बािर कदरी-पिाचड़यों ंकी गुफा में सतत राम-नाम का जप करते हुए आनन्दपूवपक एकान्तवास चकया। विााँ पर उन्िें अपने यात्रा - वृत्तान्त को चलखने की अन्तः प्ेरेरणा हुई और सन १९२४ की अवचध में उन्िोंनें इस कायप को पूणप भी कर चलया। विााँ के एक सज्जन श्री बोलर चवठ्ठल राव, जो नानाश्री के चमत्र भी थे, उनकी 'सरस्वती' नामक चप्रंचटंग प्ेरेस में यि पुस्तक अंग्ेरेजी में 'इन क्वेस्ट ऑफ गॉड' अथापत 'ईश्वर की खोज में' प्रकाचशत िो गयी। नानाश्री को इसकी प्रथम प्रचत अपने चमत्र द्वारा भेंट में प्राप्त हुई थी। एक चदन उस पुस्तक पर मेरी दृचष्ट पड़ गयी। कवर पेज पर पापा रामदास जी के मनमोिक चित्र को मैं देखता िी रि गया। जैसे-जैसे मैं चित्र को चनिारता रिा, उसी में रमता गया। सबकी नजर बचाकर, ऊपरी मंचजल के िॉल में बैठकर प्रचतचदन दोपिर को उस पुस्तक को आचद से अन्त तक पढ़कर मैंने एक सप्ताि में पूणप कर चदया।

उस समय मैं नौ वषीय मातृ-चविीन बालक िी था। चतुथप श्ेरेणी का छात्र था। इस पुस्तक को पढ़ने से मुझे भारत देश का चसंिावलोकन िो गया चजससे अब तक मैं पूणपतया अपररचित था। देश के चवचभन्न धाचमपक स्थानों ंका पता िला, जो मेरी कल्पना में भी निीं ंथे। 'चिमालय' में सुस्तस्थत 'बिीनारायण' तथा 'केदारनाथ' मस्तन्दर, कलकत्ता के पास 'दचक्षणेश्वर' के श्री रामकृष्ण परमिंस का तथा भवताररणी के 'काली मस्तन्दर' इत्याचद का प्रथम पररिय चमला। 'अन्नक्षेत्र', 'चभक्षा' 'राम-भजन' आचद शब्द मेरे शब्दकोष का अंग बन गये। 'समाचध', 'भावातीत अवस्था', शब्दों ंसे पिलीबार पररचित हुआ।

भारतवाचसयों ंकी जीवनशैली का एक नया पररदृश्य मेरे सिुख सुस्पष्ट हुआ। अब तक की मेरी चदनियाप तो घर से चवद्यालय और चवद्यालय से घर तक िी सीचमत थी। जब से इस पुस्तक को पढ़ना प्रारम्भ चकया, उस समय से स्वामी रामदास जी से प्रत्यक्ष चमलन की उत्कण्ठा-ललक जाग्रत िो गयी थी। परन्तु उनका अता-पता मालूम न था। जब मिारे घर चभक्षा िेतु कोई साधु आते तो मैं तुरन्त पुस्तक लाकर फोटो चदखाते हुए उनके बारे में पूछताछ चकया करता। चकसी से भी कुछ पता न िलने के कारण मैं चनराश िो गया था। आस्तखरकार एक चदन एक साधु द्वारा ज्ञात िो गया चक स्वामी रामदास जी का आनन्दाश्रम, मंगलौर के चनकट िी कन्नगढ़ रेलवे स्ेटेशन से एक दो मील की दूरी पर ि। अब तो मैं यथासम्भव शीघ्राचतशीघ्र िी उनके दशपनाथप जाना िािता था।



सन १९३२ की बात िै। चपता श्री की अचभलाषा थी चक मैं और छोटा भाई राघवेन्द्र, िम दोनों ंमिास चपतृगृि में आकर अचग्रम चशक्षा ग्रिण करें। चशक्षण अंग्रेजी माध्यम से शुरू हुआ, क्योंचक िमें तचमल भाषा का ज्ञान निीं ंथा, दूसरी भाषा संसूकृत ली थी। इस प्रकार देववाणी द्वारा अपने देश की ज्ञान-चनचध के सम्पकप में आने का भी सौभाग्य चमल गया। अपने पूवपजों ंके धमप सम्बन्धी विनामृत, पचवत्र ि ररत्र, आिार-व्यविार, धमपचनष्ठा एवं जीवन के उच्चादशप
इत्याचद िमको वैचदक ज्ञान तथा 'सुभाचषत' द्वारा प्राप्त हुए। इस समय तक मेरी बड़ी बचिन िेमलता बाई का पाचणग्रिण चिदम्बरम शिर के पास अन्नमलाई यूचनवचसपटी के संसूकृत-प्रोफेसर के साथ िो िुका था और अब वि गभपवती थीं।ं माताश्री के जीचवत न रिने से प्रथम प्रसव के चलए नानी-नानाश्री के घर मंगलौर जाना अचनवायप िोने के

कारण उनें वािाँ छोड़ आने का मुझसे आग्रि चकया गया, चजसे पूणप कर चदया गया। प्रसव काल के तीन–िार मास पिात बचिन की तरफ से पुनः सन्देश प्राप्त हुआ चक प्रथम सन्तान के जन्मोपरान्त पिले उनें अपनी ससुराल कोयम्बतूर ले जाना िै, तदुपरान्त अन्नमलाई पहुाँिाना िै।

इस प्रकार मंगलौर जाने का सुअवसर पुनः प्राप्त िोने पर मैं अचत प्रसन्न था। मिास-मंगलौर मेल में यात्रा करने तथा रास्ते में कन्नगढ़ रेलवे स्टेशन को देखने पर तो अन्तमपन अचभभूत िो उठा। भावावेश में मैं उतरने िी लगा था चक एकाएक ख्याल आ गया चक रास्ते में रुकना उचित निीं, क्योंचक मंगलौर स्टेशन पर कोई मेरी प्रतीक्षा में खड़ा िोगा। इसचलए यात्रा स्थचगत करने का चविार छोड़ चदया। घर पहुाँि गया। चवशेष कारणवश तीन िार चदन के चलए बचिन िेमलता बाई को वािाँ से प्रस्थान स्थचगत करना पड़ा था। इस अवचध में कन्नगढ़ जाने का सौभाग्य-सुअवसर प्राप्त हुआ जानकर प्रसन्नता का पारावार न था। नानाश्री से अनुमचत तथा कुछ धनराचश लेकर मैं िल पड़ा। मंगलौर से टेरन पकड़ कर कन्नगढ़ पहुाँि गया।

वािाँ उतरकर स्वामी रामदास जी के आनन्दाश्रम का रास्ता पूछते-पूछते अिानक अपने को आश्रम के मुख्य द्वार पर खड़ा पाया। अन्दर प्रवेश करने पर देखा चक भजन िॉल, जिााँ मुझे जाना था, वि कुछ दूरी पर िै। विीं पर स्वामी रामदास जी अपना मध्याह्न भोजन कर रिे थे। उनके दशपन की मेरी तीव्र उत्कण्ठा देखकर उनके सेवक अनौपिाररक ढंग से मुझे सीधे उनके पास ले गये। अन्ततः मेरे हृदय की चिराकांचक्षत अचभलाषा पूणप हुई; सपना साकार िो गया। मैं 'इन क्वेस्ट ऑफ गॉड' पुस्तक के रिचयता के समक्ष खड़ा था। स्वामी रामदास जी ने प्रेचमल मुस्कान से मेरा स्वागत चकया। कुसी के सामने सूटूल पर रखे तचकए के ऊपर उनकी टााँगें थीं। घुटने टेककर उनके सम्मुख मैंने प्रणाम चकया। चफर उनके दोनों िरणकमलों को िाथों में लेकर अपने चसर को उन श्री िरणों के निी रख चदया। मृदुता से उनके सुकोमल िरणों को अपने शीश पर रखकर शुभाशीवापचदत हुआ। इस प्रकार पापा रामदास जी के प्रथम दशपन से ऐसी सुखद अनुभूचत हुई जैसे 'धरती पर स्वगप' उतर आया िो। तदुपरान्त, मेरे और उनके मध्य कुछ वाताप हुई। मैंने कई प्रश्न पूछे। उत्तर भी चमल गये। कुछ प्रश्नों के उत्तर के चलए उन्होंने मुझसे प्रश्न पूछे।

चफर उन्होंने मुझे भोजन करने का आग्रि चकया। मुझे याद आता िै चक वि वात्सल्यमयी पूज्या कृष्णाबाई माता जी िी थीं चजन्होंने ममतापूवपक मुझे भोजन कराया था। भोजनोपरान्त अल्प चवश्राम चकया। उन सबने मुझे राचत्र पयपन्त रुकने का आग्रि चकया चकन्तु मैंने उनें अवगत कराया चक उसी चदन वाचपस पहुाँिना अत्यावश्यक िै। चफर मुझे वि 'द चवज़न' पचत्रका के कायापलय में ले गये; जिााँ मैंने 'इन क्वेस्ट ऑफ गॉड' की एक नयी प्रचत खरीद ली। तत्पिात , पूज्य पापा से चवदा लेकर कन्नगढ़ स्टेशन से मंगलौर की गाड़ी पकड़ कर घर वाचपस पहुाँि गया। मधुर राम-नाम से प्लाचवत आनन्दाश्रम की पचवत्र भूचम का वि अचवस्मरणीय अनुभव आज भी मेरे स्मृचत पटल पर ज्यों का त्यों अंचकत िै।

श्री एम. एस. कामत एक चवख्यात लोकचप्रय प्रकाशक तथा लेखक, उन चदनों (सन १९३०-४० में) 'सण्डे टाइम्स' नामक एक रचववारीय समािार पत्र मिास से प्रकाचशत चकया करते थे। यि अत्यचधक जनचप्रय समािार पत्र था; कारण चक इसमें चवचवध चवषयों–चवषयक लेख प्रकाचशत िोते थे चजसमें सदैव कम से कम एक पृष्ठ पर अथवा कभी-कभी दो पृष्ठों पर धमप सम्बन्धी लेख एवं समािार प्रकाचशत िोते थे। एक रचववारीय समािार पत्र के चनधापररत धमप चवषयक पृष्ठ पर स्वामी रामदास जी का चित्र देखकर मुझे सुखद आियप हुआ। साथ िी यि सूिना पढ़कर उल्लचसत हुआ चक नगर के सारस्वत समुदाय के चनमन्त्रण पर वि मिास आयेंगे और प्रविन भी करेंगे। चनचित चदनांक-समय-स्थल सचित सभा का कायपक्रम प्रकाचशत था। एक सायं उनका प्रविन सुप्रचसद्ध गोखले िॉल (सभागार) में था। दूसरे चदन, मध्याह्न उनके दशपन, प्रविन, भजन के साथ-साथ, सत्संगोपरान्त भोजन का भी अनौपिाररक कायपक्रम था। गोखले िॉल कैसे पहुाँिा जाए, इसकी जानकारी मैंने चवस्तार से प्राप्त कर ली थी।

कारण चक, िमारा पाररवाररक चनवासस्थान, नगरीय भीड़-भाड़ से बहुत दूर नगरोपरान्त - जिाँ मूयूचनचसपल कापोरेशन की सीमा समाप्त तथा चिस्तस्टरक्ट बिोप का क्षेत्र प्रारम्भ िोता था, विाँ अवस्तस्थत था।

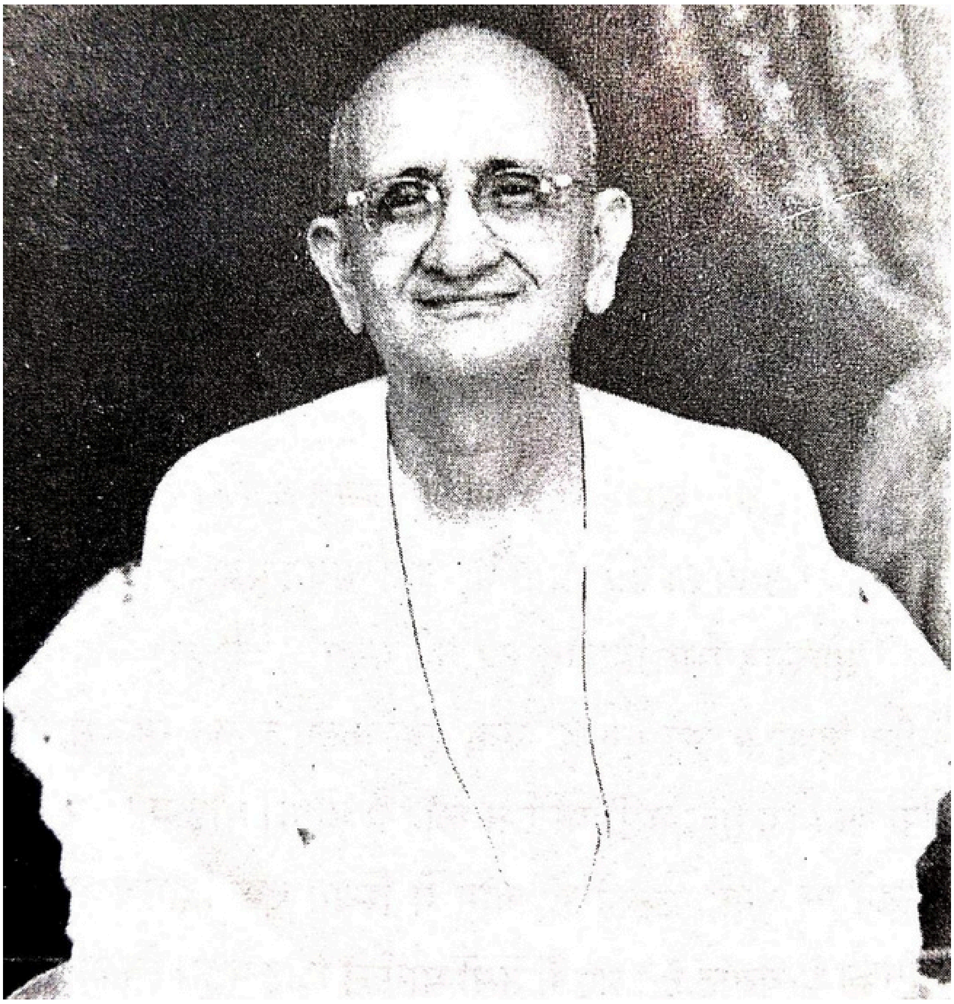
जब मैं गोखले िॉल पहुाँिा तो पाया चक वि ठसाठस भरा हुआ था। मैं विाँ प्रचवष्ट भी निीं ंिो सका। सभी कुचसपयों ंपर श्रोतागण आसीन थे। बहुत से लोग पीछे खड़े हुए थे। मुझे िॉल ढूाँढने में समय लग गया था। जब मैं पहुाँिा तो पापा रामदास जी पिले से िी प्रविन कर रिे थे। मेरी आाँखों ंने एक अनोखा दृश्य देखा। सामान्यतः मंपिर बैठने की औपिाररक व्यवस्था (जैसे सामने एक मेज और उसके पीछे कुछ कुचसपयााँ) दृचष्टगोर निीं ंहुई। उनकी सिमचत से िी कुचसपयााँ दीवार तक पीछे स्तखसका दी गयी थीं ंऔर मेज को आगे मंपिे एकदम चकनारे तक लगा चदया गया था। एकदम सीधा तना हुआ शरीर रखते हुए, पालथी लगा कर वि अपनी सिज मुिा में मेज पर चवराजमान थे। अपने कथनानुसार भाव-मुिाएाँ एवं िाथों ंका समुचित संिालन िो रिा था। वि कोंकंणी भाषा में प्रविन कर रिे थे। उनके श्रीमुख से शब्द-धारा अचवरत प्रवाचित िो रिी थी। वि ईश्वर-प्रेररत मनः स्तस्थचत में थे। वि राम-नाम की मचिमा तथा अनुशासनात्मक जीवन-यापन की मित्ता पर प्रकाश िाल रिे थे। श्रोतागण मन्त्रमुग्ध िो उनके श्री मुख से चनःसृत शब्दों ंका पान तथा कथन का श्रवण कर रिे थे।



विाँ से िलने के पूवप आयोजकों ंसे मिास में पापा के ठिरने के स्थान के बारे में मैंने ज्ञात कर चलया था। मुझे बताया गया चक वि प्रचसद्ध सेन थोम कॉलोनी में िॉ० गोपाल कतरे के गृि में ठिरे हुए थे। मिास के सुप्रचसद्ध समुितटीय मरीना के दचक्षणीय अस्तन्तम छोर पर जिाँ मरीना समुिी तट की सड़क समाप्त िोती थी, विाँ से यि आवासीय कॉलोनी प्रारम्भ िोती थी। दूसरे चदन पावन सन्त के दशपनाथप एवं सत्संग की उत्कट लालसा के साथ िे तपट से मयलापुर बस टचमपनल पहुाँिा। सेन थोम पहुाँचने के चलए मैं पूवापचभमुख िो समुि तट की चदशा में पैदल िी िलने लगा। सेन थोम से समुि के समानान्तर एक लम्बी सड़क िै, चजसके दोनों ंओर कुछ आवासीय भवन अवस्तस्थत िैं। जब मैं मयलापुर कॉलोनी पार कर सेन थाम रिी पहुाँिा, तब मैंने दो व्यस्तियों ंसे िॉ० कतरे के चनवास स्थान के चवषय में पूछा तो उन्िोंनें सुचनचित जानकारी के अभाव में अस्पष्ट सा उत्तर दे चदया। वास्तव में चजस स्थान पर मैंने

इन व्यक्तियों ंसे पूछा था, विाँ से बायीं ंओर िॉ० कतरे का चनवास स्थान मात्र एक फलांग की दूरी पर था। अनचभज्ञता के कारण मैं दायीं ंओर मुड़ गया और लगातार िलता रिा। कभी-कभी रुक कर स्थानीय व्यक्तियों ंसे िॉ० कतरे के चनवास स्थान के चवषय में पूछ लेता। भीषण गमी में मैं एक मील से अचधक िल िुका था। आगे पहुाँि कर मैं चफर रुका और एक सज्जन से पूछा जो एक भि जान पड़ता था; सम्भवतः दचक्षणी कन्नड़ व्यक्ति था। उसने उत्तर चदया, "अिौ, िॉ० कतरे ! आपका अचभप्राय िै, जिााँ पावन मिापुरुष स्वामी रामदास जी ठिरे हुए िैं?" सोत्सािा चसर चिलाते हुए मैंने किा, "जी िााँ!" उसने बताया चक "आप चवपरीत चदशा में आ गए िैं, एक एक कदम लिते रिने से और दूर िोते गये। मयलापुर के मोड़ तक उसी मागप से लौटना िोगा। मोड़ को पार करके अपनी दायीं ंओर मुड़ने पर उनके अपने िी बाग में स्तस्थत एक चद्वतला भवन देखने को चमलेगा।" उसको धन्यवाद देते हुए मैं उसी मागप से लौट पड़ा। चिलचिलाती धूप के कारण पसीने से तरबतर िो गया था। अब तक मध्याह्नोत्तर िो िुका था। अन्ततोगत्वा िॉ० कतरे का चनवास स्थान चमल गया।

मैंने भवन में प्रवेश चकया और सीचढ़यााँ िढ़ गया। मुझे बताया गया चक नगर में चकसी चनयोचजत सस्तिलन (भेंट) के चलए स्वामीजी प्रस्थान के चलए तैयार थे। अतः उचित यिी था चक शीघ्रता की जाए और इस सुअवसर को िाथ से न जाने चदया जाए। मैं सीचढ़यों ंपर दौड़ा और चद्वतीय तल पर पहुाँि गया। स्वामी रामदास जी खड़ाऊँ पिने, िाथ में छड़ी पकड़े नीिे उतरने के चलए सीचढ़यों ंपर आ रिे थे। एक सज्जन मुझे उनके सिुख ले गए, तथा उन्ें बताया, "यि नवयुवक आपके दशपनाथप एवं आशीवापद प्राप्त्यथप आया िै।" तत्क्षण नीिे झुककर चसर से उनका िरण स्पशप चकया। स्वामी रामदास जी एक िाथ छड़ी पर धरे झुके और दूसरे िाथ से िाचदपक स्नेि-सचित मेरी पीठ पर जोरदार थपकी दी। उन्ोंने किा, "रामदास के आशीवापद आपके साथ िैं। रामदास ने अभी प्रस्थान करना िै। राम नाम जपो। भगवान का स्मरण करो।" और वि नीिे कार की ओर िले गये। आनन्दाश्रम में हुई प्रथम भेंट-दशपनोपरान्त, यि मेरी चद्वतीय संचक्षप्त भेंट थी।



दो वषप पित चवश्वयुद्ध के कारण चब्रचटश अचधकारी पूवी तट को असुरचक्षत समझने लगे थे। तीन अत्यन्त मित्त्वपूणप स्टरीट मिास बन्दरगाि सचित चब्रचटश अचधकाररयों ंद्वारा खाली करवा दी गयी थीं।ं मिास के सभी घरों ंमें अने्धेरा रखना अचनवायप िो गया था। यिााँ तक चक चकसी भी गृि में बत्ती का प्रकाश अथवा मोमबत्ती की प्रकाश-चकरण भी निीं ंिोनी िाचिए। नगरवाचसयों ंने घरों ंकी सभी स्तखड़चकयााँ बन्द कर दी थीं।ं सूयापस्त के उपरान्त नगर कचब्रस्तान सा चदखायी देता था। गवनपर के आदेशानुसार नगर-मेयर ने यि घोषणा कर दी थी, "नगरवाचसयों ंकी सुरक्षा तथा बिाव के चलए चकसी भी प्रकार का आश्वासन निीं ंचदया जा सकता। समस्त नगरवाचसयों ंको किीं ंदूर अथवा अपने सम्बस्तन्धयों ंके घर स्वरक्षाथप िले जाना िाचिए। उनके द्वारा नगर खाली करने के चलए चवशेष रेलगाचड़यााँ िलाने की व्यवस्था कर दी जायेगी।"

मेरी आयु इस समय पच्चीस वषप की िो गयी थी। मेरे बड़े िािरे भाई, मैं और संयुि पररवार के कुछ अल्पवयस्कों ंको मिास से कोयम्बतूर, जिााँ िमारी पाररवाररक जागीरदारी थी, जाने की व्यवस्था की गयी थी। आज भी मैं यि समझने में असमथप हाँ चक चकस प्रकार मिास के एक बड़े बंगले से, जो िमारा बिपन का चनवास स्थान था, छोड़ देने की इस जचटल प्रचक्रया द्वारा मिानगरी कोयम्बतूर में वास करने िेताथप अपने आपको िम समायोचजत-व्यवस्तस्थत कर पाये।

आध्याम्मत्मक यात्रा का श्री गणेश

सन १९३२ से १९४२ तक के लगभग दस वर्षों से, जब से मैंने मंगलौर छोड़ा और मिस पहुँाा, तब से िी मेरे अन्तमपन में शनैः शनैः एक आन्तररक रूपान्तरण िो रिा था। तीन आध्यास्तत्मक सररताओं ंका स्थायी पावन संगम मेरे जीवन में उद भूत िो िुका था। मिस में िी सन १९३३ के लगभग 'गॉस्पल ऑफ श्री रामकृष्ण' पुस्तक से प्रभाचवत मैं उनके वशीभूत िो िुका था। चद्वतीय, एम० एस० कामत द्वारा प्रकाचशत 'सण्ड़े टाइम्स' के एक चवशेषांक में नवयुवक रमण मिचषप के चवद्याथी जीवन के मात्र सत्रि वषप की आयु में िी पररत्याग चवषयक चवचशष्ट लेख पढ़ा। उसमें उनका फोटो भी था। इस लेख से मेरे भीतर त्याग की भावना प्रसुफुचटत हुई और आत्म-साक्षात्कार प्राप्त करने का चविारोदय हुआ। तृतीय, श्री पी० के० चवनयरंगम द्वारा प्रकाचशत 'माई मैगज़ीन ऑफ इंचिया' में मुचित स्वामी चशवानन्द जी के आध्यास्तत्मक साचित्य तथा उनके अमृत-विनों ंकी एक पुस्तक का अध्ययन प्रारम्भ कर चदया था। इन तीनों ंसन्तों ंने इस एक िी केन्द्रीभूत चविार को बार-बार दोिराते हुए मेरे मन में अंचकत कर चदया -

"जीवन का लक्ष्य िै भगवत्साक्षात्कार। भगवत्साक्षात्कार में िी जीवन की अथपवत्ता िै। भगवत्साक्षात्कार चकए चबना ी यचद आप मृतुयु को प्राप्त िो जाते िैं तो आपका जीवन व्यथप िै। मानो आपने प्रभु-प्रदत्त बहुमूल्य मानव जन्म-जीवन उपिार को व्यथप िी गँवा चदया।”



अब मेरा हृदय वैराग्य की प्रिण्ड अचि से संपूररत िो िुका था। संसार- पररत्याग और सुदूर चिमालय में किीं ंभी एकान्तवास के अचिनपश चविार ने मेरे मन पर आचधपत्य जमा चलया था। मैं दुचवधा में था। यद्यचप मैं अचववाचित था

और इस दृचष्टकोण से पूणपतया मुि भी था, चकनुतु स्वयं को स्वधमप कतपव्य-बन्धन से और पाररवाररक कचनष्ठों ंऔर
वररष्ठ जनों ंके प्रचत, चजनकी मुझे सेवा करनी थी, दाचयत्वों ंसे अपने को बद्ध समझता था। चपताश्री का स्वास्थ्य उत्तम निीं ंथा; साथ िी साथ मिास से चववश गमन के आघात से उनका भावुक हृदय आित िो िुका था। ज्येष्ठ पुत्र के नाते स्वकतपव्य पूचतप चिताथप मैं घर में रुकने को बाध्य िो जाता था। दूसरी ओर लौचकक बन्धनों ंके चवच्छेदन की
[illegible]और मैं इस चविार-भय से कस्तम्पत िो जाता चक क्या मैं कभी भी चनवृचत्त-पथ का पचथक निीं ंबन पाऊँगा? इस चविार संघात ने मुझे प्रिण्ड वैराग्य, भस्ति-युि त्याग-तपस्या और गिन ध्यान-चिताथप तुरन्त आवश्यक पग उठाने के चलए अत्यचधक बाध्य कर चदया था।

आर० एस० पुरम चनवास स्थान में जैसे तैसे अब आठ-नौ मिीने व्यतीत हुए थे। मैंने बलवती दृढ़ता से यि मिसूस चकया चक मुझे अब और चवलम्ब निीं ंकरना िाचिए। अचधक प्रतीक्षा चकये चबना अब शीघ्राचतशीघ्र अचवलम्ब अस्तन्तम कदम उठा लेने की उत्कटता मेरे अन्तमपन को प्रेररत तथा उद्वेचलत कर रिी थी। धीरे-धीरे मन में एक योजना ने यि रूप धारण चकया। मैं घर से यि सूचित करके जाऊँगा चक भगवान वेंकटेश्वर के दशपनाथप पावन चतरुपचत धाम जाकर कुछ चदन विाँ वास करना िै। मैं जानता था चक इससे वे सब सिषप सिमत िोंगे। कारण चक समूपूणप पररवार चतरुपचत भगवान का िी आराधक-उपासक था, तथा मैंने निी चतरुपचत शिर से समिूे सप्तचगरर पर पैदल िलकर चतरुमला जाने की प्रचतज्ञा की हुई थी। ऐसा सूचित कर मैंने घर का त्याग चकया।

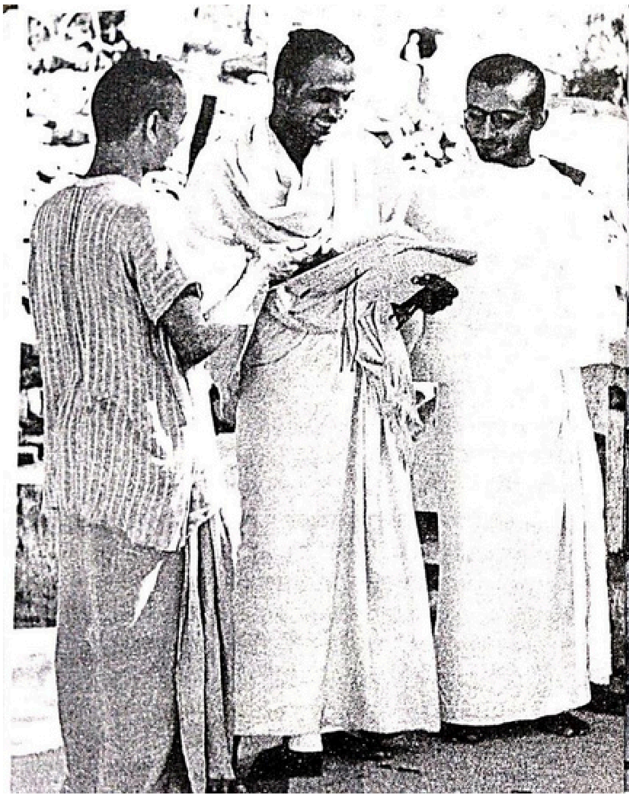
चतरुपचत स्थानम से मैंने पत्र चलख चदया चक चशरडी साईं बाबा समाचध स्थल जाने के चलए भी मैं इसी प्रकार विन-बद्ध था। दोनों ंपुण्य स्थानों ंकी यात्रा तथा भगवान के दशपनाथप आने की योजना यथाथप और यथोचित थी। चकनुतु लौटकर आने का मेरा चविार कदाचप निीं ंथा। मेरा यि पररत्याग सदा के चलए था। जो मित्त्वपूणप कदम जीवन में उठाने जा रिा था, उससे सम्बस्तन्धत मैं पिले से िी पाँि आध्यास्तत्मक मिापुरुषों ंसे आशीवापद प्राप्त्यथप पत्र चलख िुका था। एक पत्र भगवान श्री रमण मिचषप जी को, एक स्वामी रामदास जी को, एक स्वामी राजेश्वरानन्द जी को (सुचवख्यात दाशपचनक िॉ० टी० एम० पी० मिादेवन के गुरु), िौथा पत्र चतरुपचत धाम से दस मील दूर व्यास आश्रम येरपेिू आन्ध्रप्रदेश के पूज्य मलयाला स्वामी जी को। गुरुदेव स्वामी चशवानन्द जी के सम्पकप में तो पत्र- व्यविार द्वारा मैं पूवपवत िी था। श्री रमण मिचषप जी का उत्तर संचक्षप्त था, उसके द्वारा मुझे सूचित चकया गया चक मेरा पत्र भगवान के सिुख प्रसुतुत कर चदया था। भगवान का प्रसाद चवभूचत तथा कुमकुम की पुचड़या पैकेट संलि था। स्वामी रामदास जी का उत्तर चवचशष्ट प्रकार का था। स्वामी जी ने चलखा था- "चप्रय राम ! आपने यि तो चलखा िी निीं ं चक आप कौन-सा, कैसा कदम उठाने जा रिे िैं? अतः चबना जाने रामदास कैसे आशीवापद दे? तथाचप समस्त शुभ कायों के चलए रामदास का आशीवापद िै।"

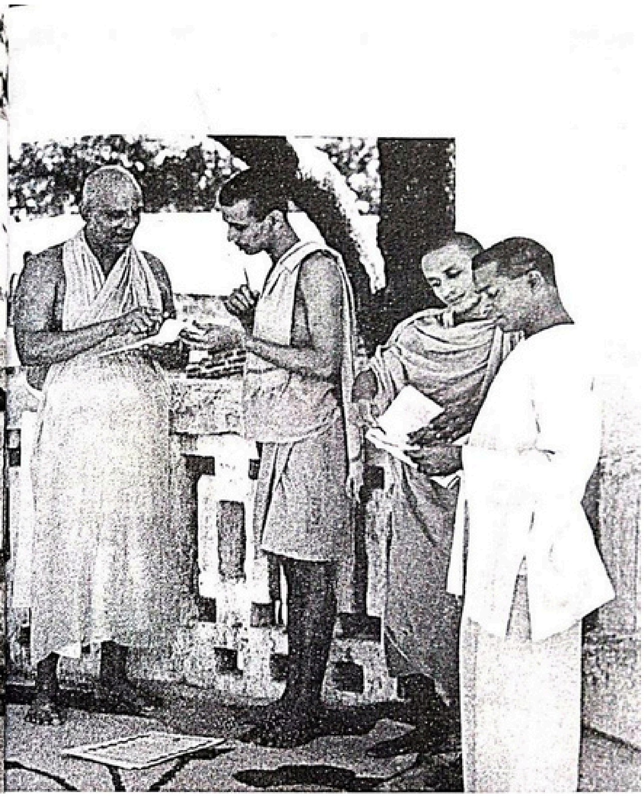
जिाँ जिाँ, मैं भ्रमण कर रिा था, मैंने पत्र द्वारा घर से सम्पकप बनाये रखा, जैसे चक मैंने लौटना िो। जबचक वापसी का इरादा मेरा चबलुकुल निीं ंथा। इस भ्रम में रखने का एक कारण तो यि था मैं अकस्मात िी उनको असिनीय कठोर आघात निीं ंपहुँिाना िािता था चक मैं सदैव के चलए उनसे दूर िला गया और वे मुझे पुनः कभी भी निीं ंदेख पायेंगे। क्योंचक उन चदनों ंचिमालय भारत का एक सुदूर क्षेत्र समझा जाता था। चशरडी में एक मास ठिरने के उपरान्त मैंने पररजनों ंको पत्रचिदानन्द आत्मकथा चलख चदया चक मैं मथुरा-वृन्दावन जाना िािता था। वृन्दावन पहुँिने पर श्री रामकृष्ण सेवा आश्रम में तीन सप्ताि व्यतीत चकये। मथुरा भी दशपनाथप गया था। वृन्दावन से मैंने श्री स्वामी चशवानन्द जी मिाराज को पत्र चलख चदया था, "मैं आपके श्री िरणों ंमें समचपपत िोने तथा मिाराज श्री की सेवाितेु आश्रम आ रिा हाँ।" प्रतुयुत्तर चमला - "आपका पत्र प्राप्त हुआ। ओ जी िाँ, आप आ सकते िैं। आदर, प्रेम और ॐ।"

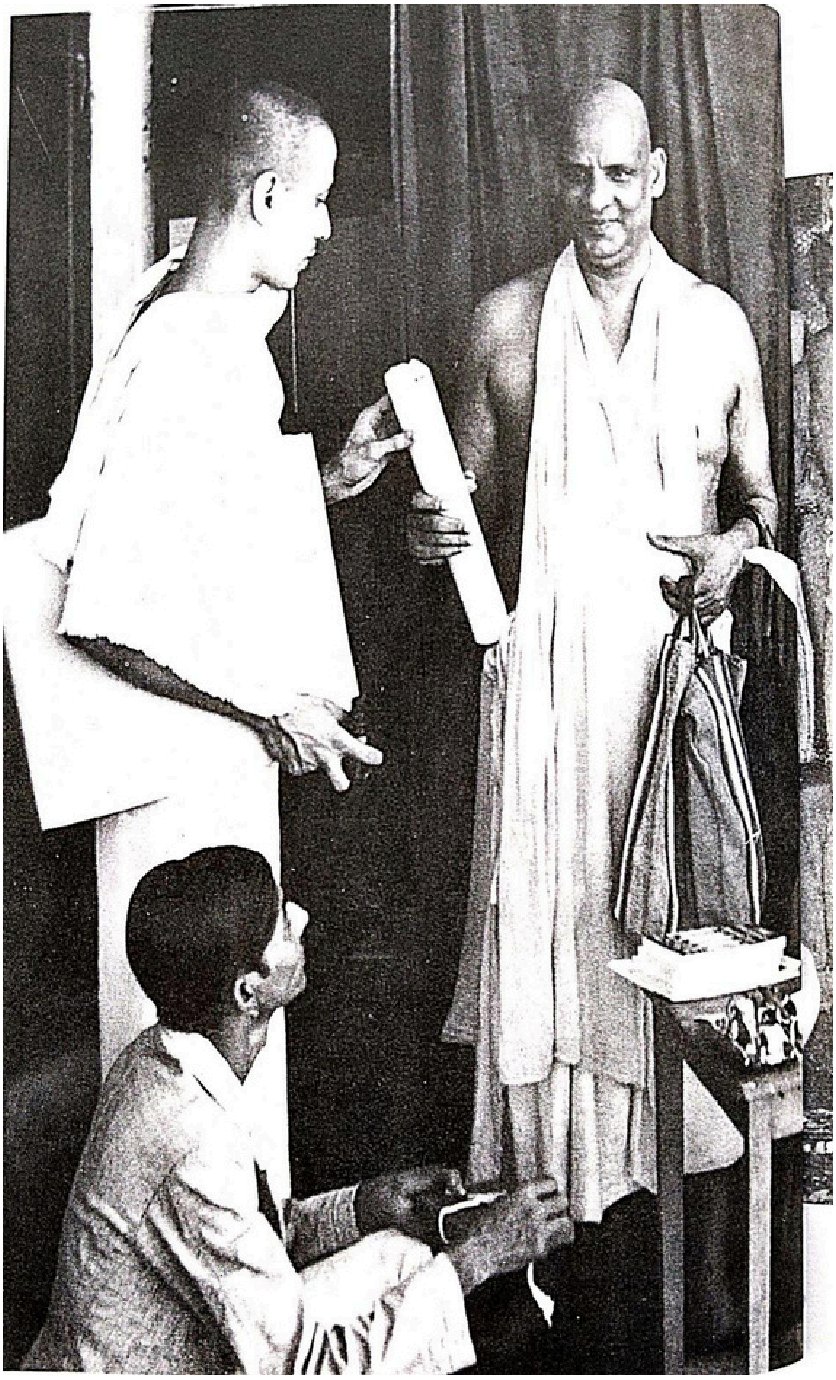
विाँ से चदल्ली गया। चदल्ली से िरद्वार पहुाँने पर मैं श्री रामकृष्ण सेवा आश्रम, कनखल में रुका। मिास मठ के स्वामी अशेषानन्द जी का पत्र चदए जाने पर सब मेरे प्रचत बड़े दयालु रि। यिाँ कनखल के अध्यक्ष स्वामी अजयोनन्द जी थे। वि गुरुदेव से भली-भााँचत पररचित थे। १९ मई १९४३ को बुद्ध जयन्ती अथवा बुद्ध पूचणपमा के पावन चदवस पर ऋचषकेश जाने के चलए मैंने उनसे चवदा ली। ऋचषकेश शिर से िेढ़ मील दूरी पर चशवानन्द आश्रम में मध्याह्नोत्तर पहुाँिा। विाँ सचन्नकट एक रामाश्रम धमपशाला में मुझे चकसी ने एक िॉल के कोने में ठिरने का स्थान
चदया।

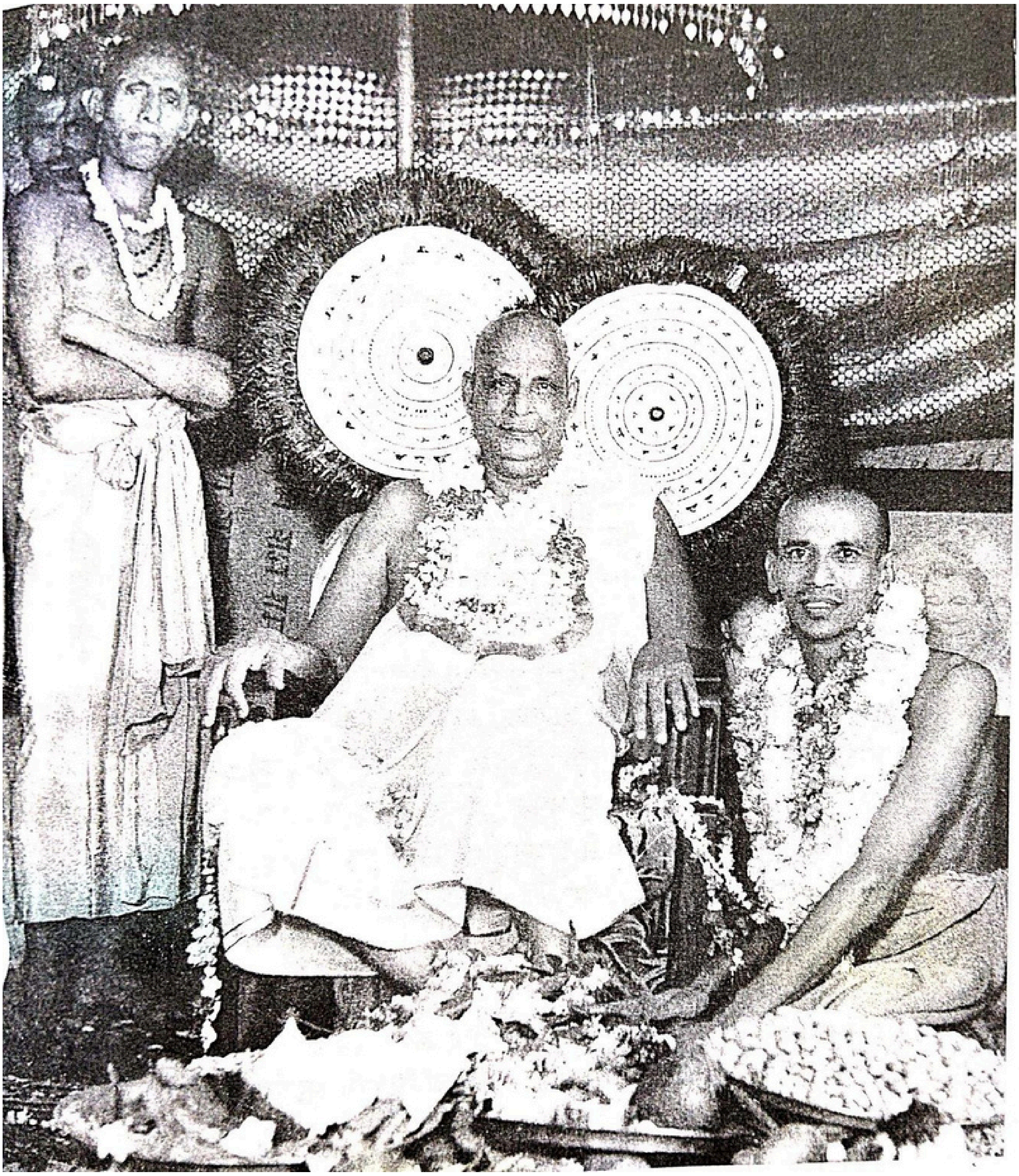
सूयोस्तोपरान्त, सान्ध्य िन्द्र-प्रकाश में श्री स्वामी चशवानन्द जी मिाराज िाथ में बड़ा िंिा चलये आश्रम के ऊपरी भाग से नीिी की ओर आए। उनके पीछे एक ब्रह्मिारी िाथ में िरीकेन लालटेन चलये हुए था। जैसे वे चनकट पहुाँिे, तत्क्षण मैंने धरती पर लेटकर साष्टांग दण्डवत प्रणाम चकया। उन्िोंनें पूछा, "यि कौन िै?" सिवचतपयों ने बताया, "यि श्रीधर राव िै, जो मथुरा से पत्र व्यविार करता रिा।" उन्िोंनें कृपा-पूररत शब्दों में किा, "उठो सौम्य !"

मैंने वैसा िी चकया। मुझे ऐसा अनुभव हुआ चक मैं अपने गन्तव्य पर पहुाँि गया। परमात्मा के आशीवापद से मैंने अपने आपको सौभाग्यशाली पाया। इस प्रकार मेरा समूपूणप जीवन सद ्गुरुदेव श्री स्वामी चशवानन्द जी के श्रीिरणों में पूणपरूपेण समचपपत िो गया। संसार के बाह्य धरातल पर यि भौचतक यात्रा का तो िरम चबन्दु था, और आध्यास्त्मक यात्रा का श्री गणेश शुभारम्भ ।









श्री गुरुदेवा–रणाचश्रत

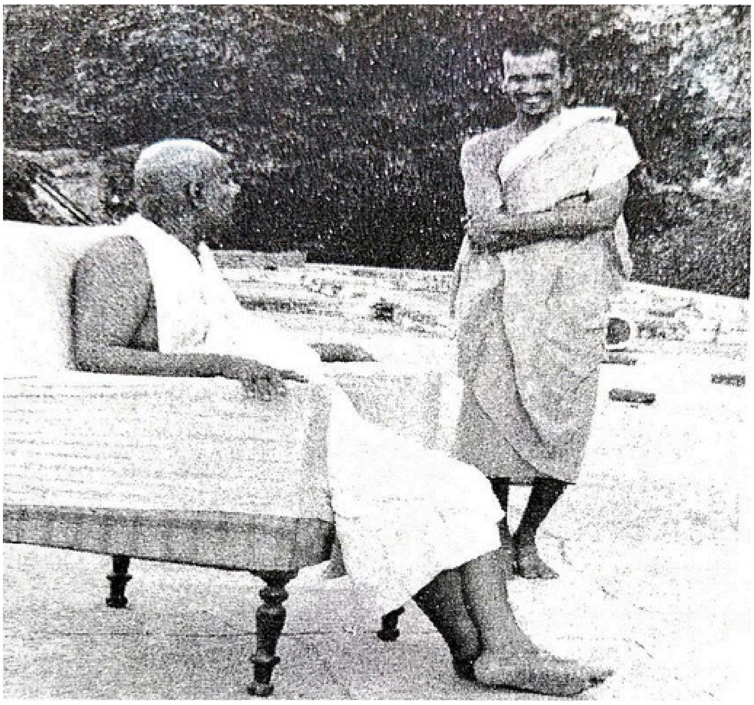
चशवानन्द आश्रम में प्रवेश के बाद श्रीधर राव ने शीघ्र िी एक प्रमुख साधक और मित्त्वपूणप प्रभावशाली व्यस्तित्व के रूप में ख्याचत प्राप्त कर ली थी। वि आश्रम के केन्द्र चबन्दु िो गये थे। गुरुदेव स्वामी चशवानन्द जी मिाराज ने उन पर आश्रम की समूपूणप व्यवस्था का दाचयत्व सौंपं चदया था चजसको चनभाते हुए चवचभन्न कायप-चवभागों ं में अनेकचवध रूप से कुशलतापूवपक उन्ोंनें सवोत्तम प्रचशक्षण प्राप्त कर चलया था। सन १९४९ में गुरुदेव ने उन्ें पचवत्र संन्यासाश्रम में दीचक्षत कर, स्वामी चिदानन्द सरस्वती नाम से चवभूचषत चकया।

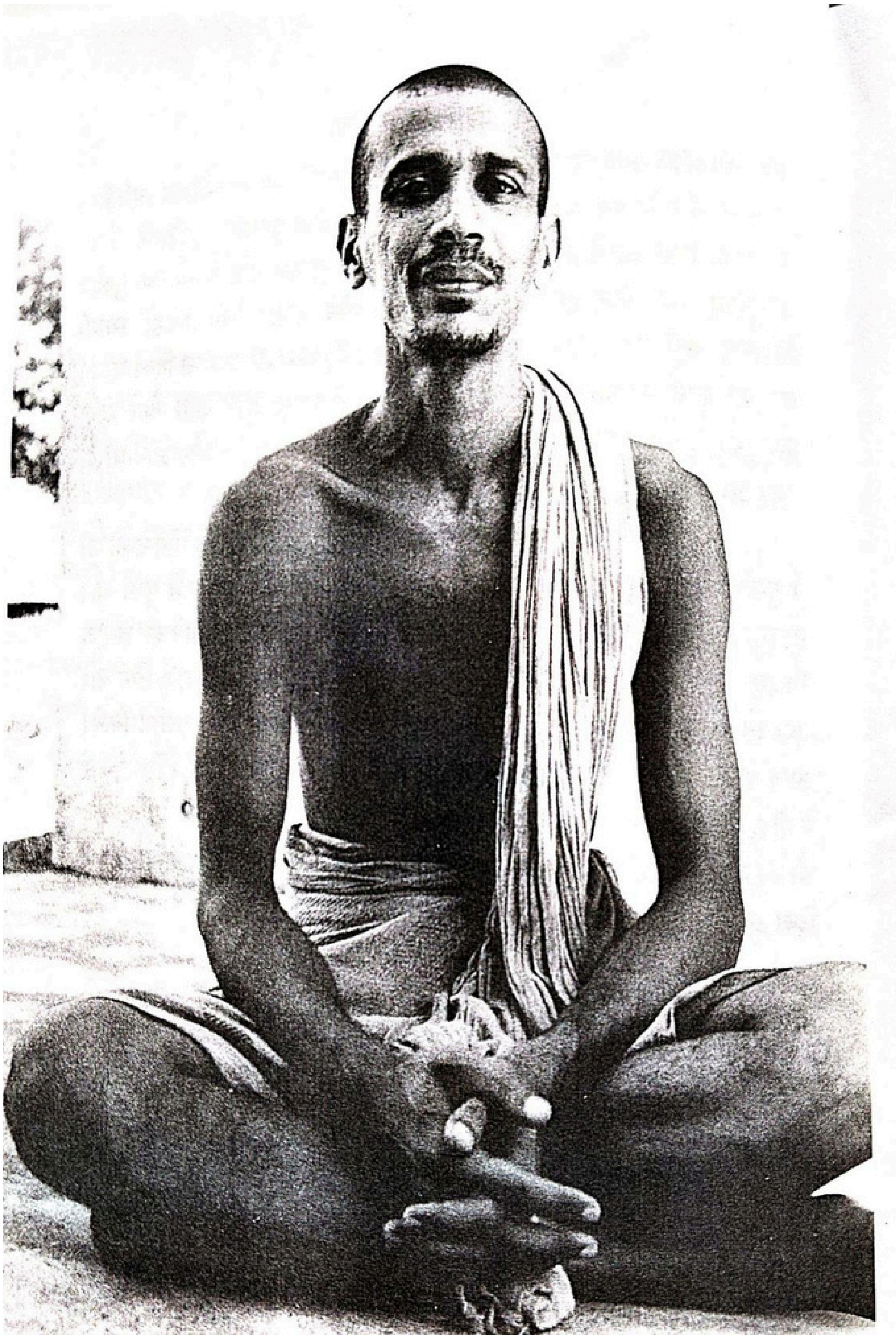
कई समय ऐसे आए, जब कुछ भि जन गुरुदेव से उनके आध्यास्तत्मक उत्तराचधकारी के चवषय में जानकारी प्राप्त करना िािते थे। यद्यचप उसका उत्तर चभन्न-चभन्न ढंग से चदया गया था तथाचप भाव-आशय तो एक समान िी था। सन १९४४-४५ की बात िै, गुरुदेव के एक मारवाड़ी भि श्री काशीराम गुप्ता जी (श्री रामचनवास गुप्ता जी के चपताश्री) कलकत्ता से गुरुदेव के दशपनाथप आश्रम में आये हुए थे। गुरुदेव ने उन्ें अपने गंगा-तटस्थ कुटीर में बुलाया और आश्रम में उनकी सुख- सुचवधा के बारे में पूछताछ कर जानकारी प्राप्त की। तभी एकाएक गुरुदेव ने उनकी ओर देखते हुए बताया, "ओ जी! मेरा उत्तराचधकारी आ िुका िै।" अियप से गुप्ता जी ने पूछा, "कौन? उस समय ब्रह्मिारी श्रीधर राव, जो गंगा स्नानोपरान्त चकनारे पर खड़े िोकर तौचलए से अपना शरीर पोंछं रिे थे, ध्यानपूवपक उधर देखकर, अंगुली से संकेत करते हुए गुप्ता जी को बताया, "वािाँ देखो, गंगा चकनारे उस नवयुवक साधक को। यिी िै मेरा आध्यास्तत्मक उत्तराचधकारी।" अतएव गुरुदेव ने तब से िी, अथापत श्रीधर राव रूप में िी उन्ें अपना उत्तराचधकारी ियचनत कर चलया था। प्रारस्तम्भक चदनों ंमें िी एक बार इसी तरि अपने वृद्ध सज्जन भि मेजर जनरल ए० एन० शमाप से गुरुदेव ने किा था, "मेरा उत्तराचधकारी आ गया िै।"

सन १९६२-६३ में जब स्वामी जी आश्रम से बिार अज्ञातवास में थे, उन्ीं ंचदनों ंसंयोगवश, योग समाज-मिास के संस्थापक कचवयोगी शुद्धानन्द भारती, जो गुरुदेव के सिपाठी, बालपन के सखा भी थे, आश्रम में पधारे। उन्ोंनें गुरुदेव से पूछा, "स्वामी जी! कृपया मुझे अपनी अनश्वर वसीयत के बारेचिदानन्द आत्मकथा

३१ बतलाइए; जो आप मानवजाचत को अपनी पुस्तकों ंतथा भवनों ंके अचतररि उत्तरदान करेंगे ? क्ा यि चदव्य जीवन संघ िै अथवा पुण्यशील संन्याचसयों ंका समाज िै, चजसे आपने प्रचशचक्षत चकया िै?" ऐसा सुनकर कुछ समय तक गुरुदेव अन्तमुपखी तथा मौन िो गए। तत्पिात उन्ोंनें किा, "चनःसन्ेदि, स्वामी चिदानन्द ! विी मेरी जीवन्त आध्यास्तत्मक वसीयत िै, चजसे मेरे उपरान्त चदव्य जीवन संघ का कायप िलाने के चलए मैं अपने पीछे छोड़ रिा हाँ।" और चफर मानो ब्रह्माण्डीय दैवी योजना को अपने मन में पिले िी देख चलया िो, और आगे बोले, "वि आ रिे िैं, पहुाँिने वाले िैं।"

एक अन्य अवसर पर गीता प्ेरेस के संस्थापक श्री जयदयाल गोयन्दका जी ने गुरुदेव से चमलने पर उनके आध्यास्तत्मक उत्तराचधकारी के चवषय में पूछा था। प्रतुयुत्तर की अपेक्षा गुरुदेव ने स्वामी चिदानन्द जी को तत्काल वािाँ आने का सन्ेदेश चभजवाया। स्वामी जी ने वािाँ पहुाँिते िी, दूर से िी गुरुदेव को श्रद्धापूवपक तीन बार दण्डवत प्रणाम चकये। तदुपरान्त, श्री गोयन्दका जी को भी साष्टांग प्रणाम चकये। अन्य कुछ घचटत निीं ंहुआ, कुछ किा भी निीं ं गया। चकनुतु उनके सिज चशष्टािार ने गीता प्ेरेस के संस्थापक पूज्य गोयन्दका जी पर बहुत गिरा प्रभाव िाला। चिदानन्द जी की मात्र उपस्तस्थचत तथा चवनम्र दण्डवत ने उन्ें एक असाधारण भाव से पूररत कर चदया और मौन में िीउन्ें अपने प्रश्न का उत्तर चमल गया।





श्री स्वामी डचदानन्द जी महिाज का अपने ३९ वें जन्म-डदवस पि डदया गया प्रवचन

श्री गुरुदेव की सदेच्छानुसार यि जन्म-चदन मनाया गया, इसकी मुझे प्रसन्नता िै। पिले तो मैंने श्री स्वामी जी से क्षमा यिाना की थी, चक मुझे इसके चलए चववश न चकया जाये, चकनुतु इस उत्सव के मनाये जाने के कारण, िमने अभी-अभी समस्त धमप-ग्रन्ों ंका सार तत्त्व सुना; उनके श्रीमुख से सभी युगों ंऔर समस्त वगों के सन्तों ंके ज्ञानोपदेशों ंका सत्त्व चनःसृत िोता, िमने श्रवण चकया। िमें उपचनषदों ंका ज्ञान सरल भाषा में सुनने को चमला। कुरान, बाइचबल,

गीता,पुराण, सभी धमप-ग्रन्ों ंके अत्यन्त सरल, प्रभावशाली, रोमिषपक, उत्सािवधपक और पे्ररणास्पद जीवन्त शब्द,

प्रत्यक्ष गुरुदेव के श्रीमुख से िम सुन रि थे। इस एक िी बात के चलए, जन्म- चदन का मनाया जाना साथपक िो गया। । मैं चकतना प्रसन्न हाँ, यि वणपन निीं ंचकया जा सकता। न जाने चपछले चकतने जन्मों ंके पुण्य-कमों के पररणामस्वरूप, िम इस पावन स्थली पर बैठे हुए िैं और चजस अनन्त आध्यास्तत्मकता, असीम चदव्यता की जीवन्त ज्वाला की गुरुदेव प्रचतमूचतप िैं, उस अचि को आज वाणी के रूप में िम यिााँ श्रवण कर रि िैं। अभी जो कुछ भी आपने सुना, उसका वणपन निीं ंचकया जा सकता। उन्ोंनें िममें चदव्य प्रकाश भर चदया िै। प्रत्येक शब्द जीवन्त आध्यास्तत्मकता की धधकती अचि िै। चकनुतु गुरुदेव ने जैसे किा, कल प्रातः िम सो कर उठेंगे, तो विी, वैसे िी पुराने व्यस्ति िोंगें। परनुतु इसे चनचित रूप से सुरचक्षत रखने के चलए भगवान ने स्वामी वेंकटेशानन्द जी को भेजा हुआ िै। प्रत्येक शब्द अब चलचपबद्ध िो गया िै और यि मुचित भी िो जायेगा। मेरी आप सबसे प्राथपना िै चक गुरुदेव
के इस प्रविन की मुचित प्रचतचलचप अपने पास सुरचक्षत रखें। प्रचतचदन प्रातः उठते िी, तथा रात को सोने से पिले इसे एक बार पढ़ें। ि मारे समूपूणप जीवन के चलए एक आदशप उदािरण के रूप में और ि में, जीव से असीम सस्तच्चदानन्द आत्मा में पररणत करने के चलए, िमें उच्चतम चदव्यता तक समुन्नत करने के चलए यि एक प्रविन िी पयापप्त िै।

श्री स्वामी कृष्णानन्द जी के जन्म-चदवस का उत्सव मनाने के एकदम साथ िी, इतनी शीघ्र अपना जन्म-चदवस न मनाने के चलए मैंने श्री गुरुदेव से प्राथपना की थी चक इसे छोड़ चदया जाये। कुछ चदनों ंबाद उन्ोंनें किा, "भले िी तुम्हारी इच्छा िो या न िो, मैं तो यि मनाने जा रिा हाँ।" तब उन्ोंनें मुझे एक अद भुत नुस्खा चदया। यि मेरे चलए एक परीक्षा थी, चजसमें गुरुदेव की कृपा से मैं सफल हुआ। उन्ोंनें किा, "तुम चिन्ता क्ों ंकरते िो? उन्ें जन्म-चदन मनाने दो। तुम समझो चक यि चकसी और का जन्म-चदवस िै। अनुभव करो मैं अकताप, अभोिा हाँ। साक्षी बन जाओ।" यि आध्यास्तत्मक वटी उन्ोंनें मुझे दी। यिी भाव मैंने आज प्रातः से बनाये रखा िै। परनुतु अब तो मुझे पूरा चनिय िो गया िै चक यि चकसी और का िी जन्म- चदवस िै। चजस चिदानन्द नाम के व्यस्ति का आप सबने इतना अद भुत चववरण चदया िै, मैं भी उससे चमलना िािता हाँ।

अपने चशष्यत्व की दीघापवचध में "गुरु वाक् वेद बाक्" सूत्रानुसार स्वामी जी सतत अपनी सेवाएँ समचपपत करते रिे। अमेररका के भिों ंके साग्रि अनुरोध पर अिूबर सन १९५९ में योग तथा वेदान्त का सन्देश देने िेतु स्वामी जी को गुरुदेव ने विााँ जाने का आदेश चदया। विााँ पहुाँिकर उत्तरी अमेररका, दचक्षणी अमेररका, यूरोप और अफ्रीका के असंख्य चजज्ञासु श्रोताओं ंके हृदय पर उन्ोंनें जो गम्भीर आध्यास्तत्मक प्रभाव छोड़ा, वि अवणपनीय िै।

ॐ

"२ वषों से भी अचधक लगातार चवदेश के भीड़भाड़, कोलािल और अशास्तन्तपूणप पयापवरण में रिने तथा आध्यास्तत्मक वातापओं ंमें समय व्यतीत करते रिने के पिात, मैं यिााँ भारत में मौन तथा प्रशान्त वातावरण में रिने को लालाचयत था। यिााँ पहुाँिने पर पिासों ंपत्र उत्तर की प्रतीक्षा में पड़े देखे। पत्र चलखने वालों ंकी व्यग्रता का मैं अनुभव करता हाँ। परमात्मा उन सबको आशीवापचदत करें। केवल आपकी चनष्ठा और प्रेमाग्रि (भगीरथ के समान) का सातत्य िी इस मौन-प्रेमी स्वामी को प्रत्युत्तर देकर पत्रािार के चलए चववश कर पाये िैं। आप धन्यवाद के पात्र िैं। इस समय चवदेश से आये भिों ंके लगभग एक सौ पिास पत्र मेरे पास उत्तर के चलए रखे िैं और एक सप्ताि के अन्दर कायपक्रम-िेतु गुजरात जाने के चलए भी मुझे अनुरोध चकया जा रिा िै। विााँ जाना अवश्यम्भावी िो गया िै। भगवान िी जाने चक प्रत्युत्तर का कायप कब और कैसे सम्भव िो पायेगा। आपके सभी पत्रों ंको बार-बार पढ़ रिा हाँ, ताचक अत्यावश्यक तथ्यों ंपर मैं प्रकाश डाल सकूाँ।"



१९५९ स्वामीजी की प्रर्म डवदेश यात्रा

ॐ

" चवदेश से आने पर यिाँ मेरा समूपूणप व्यस्तित्व, मेरा अन्तमपन आन्तररक नीरवता, एकान्त-ध्यान ि तु चकसी चनजपन
स्थान के चलए आकुल-व्याकुल था। सन १९५६ के पूवप चदनों ंमें भी ऐसी िी स्तस्थचत थी परनुतु संस्था के, आनन्दकुटीर (आश्रम) के अनेकानेक कतपव्य कमों की व्यस्तता के कारण यि उत्कट लालसा अपूणप रि गयी थी। जब मैं पचिमी
देशों ंमें था तभी मुझे ऐसा आभास िोने लगा था चक भारत वाचपस पहुाँ कर इस आतुरता को रोक पाना अचत कचठन िोगा। इसचलए अन्तःप्रेरणा-अनुसार भारत लौटने पर सीधे आश्रम में गुरुदेव के श्री िरणों ंमें पहुाँ एकान्तवास के चलए उनकी अनुमचत िाने को प्रबल इचुछुक था, जो उन्िोंने अचनच्छापूवपक प्रदान कर दी थी। कारण चक पररव्राजक का क्लेशकर जीवन अपनाने की वे अनुमचत निीं ंदेना िािते थे; परनुतु मेरा अनुरोध इतना गम्भीर था चक उसे अस्वीकार भी निीं ंकरसा िाते थे।"



पूज्यपाद स्वामी जी महिााज दडक्षणी भित के पावन तीरि् स्र्लो ांकी यात्रा पि लगभग एक वषि परिव्राजक रूप से अज्ञात सांचिण किते िहे। डकन्तु श्री नागिाजन जी (पूज्य स्वामी डवमलानन्द जी) येन केन प्रकािेण उनका पता जानने में सफल हो ही गये। डफि पत्र-व्यवहाि प्रािम्भ हो गया।



ॐ

गाणगापुर

श्री एस. नागराजन जी,
चशवानन्द आश्रम।
पूज्य अमर आत्मन !
चप्रय नागराजन जी,

ॐ नमो नारायणाय।

इस समय जिाँ मेरा वास िै, वि एक नीरव स्थान िै; जो गाणगापुर (एक छोटा सा गााँव) से कुछ मील दूर िै। यिााँ चकसी प्रकार की भी कोई सुचवधा निीं ंिै। दो नचदयों ंके 'संगम' स्थल पर यि एकान्त स्थान िै। पास में िी एक छोटा-सा मस्तन्दर तथा धमपशाला, चजसमें टीन की छत वाला केवल एक बरामदा िी िै। गाणगापुर से प्रचतचदन यिााँ कुछ यात्री आते िैं जो 'संगम' - स्नानोपरान्त वाचपस िले जाते िैं। मैं यिााँ एक चभकुषु की भााँचत िी रिता हाँ। िाय-दूध खरीदने के चलए अल्प धनराचश िै मेरे पास। उचिपी के एक कन्नड़ सज्जन की एक छोटी-सी दुकान से िी िाय-दूध लेता हाँ। जब मेरे पास पैसे का अभाव िोता िै तो वि उधार दे देता िै। एक मास पूवप जब मैं यिााँ आया था, तब पंढरपुर का एक भि कुछ अनुष्ठान कर रिा था, वि मुझे मध्याह्न की चभक्षा में एक िपाती अथवा ज्वार की एक मोटी रोटी दे चदया करता था। दस चदन पूवप वि यिााँ से िला गया िै। तदुपरान्त, कुछ चदन थोड़ा भोजन मस्तन्दर से और कुछ चदन दुकानदार से लेकर चनवापि चकया। कभी एक या दो केले िी आिार में ले लेता हाँ। परनुतु सब पूणपतया ठीक िै। गुरुदेव की कृपा िी इस शरीर का भरण-पोषण तथा स्वास्थ्य की देख-रेख कर रिी िै। मैं मस्तन्दर के बरामदे में एक बोरी तथा तौचलए पर िी सोता हाँ। जैसा चक यि शिर से दूर िारों ंओर से खुला स्थान िै; सदी बहुत ै। श्रीनगर के गोचबन्दराम कपूर द्वारा दी गयी काले रंग की शाल मेरे पास िै।

गाणगापुर

चदनांकः ८ मई १९६३

श्री एस. नागराजन जी,
आनन्द कुटीर।
पूज्य आत्मन !
चप्रय नागराजन जी,
ॐ नमो नारायणाय।
जय सतगुरु चशवानन्द देव !

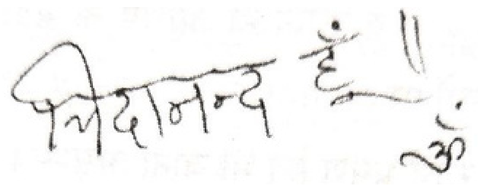
इस पुण्य चदवस बुद्ध जयन्ती (वैशाख पूचणपमा) के पावन अवसर पर िी बीस वषप पूवप मैं ऋचषकेश पहुाँिा था। उसी सान्ध्य बेला में गुरुदेव के प्रथम प्रत्यक्ष दशपन का एवं उनके श्री िरणों ंमें प्रणत िो, चवनम्र प्रणाम करने का दुलपभ सुअवसर पाकर मेरा जीवन पचवत्रीकृत िो गया और मैं धन्य धन्य िो उठा। तब से िी गुरुदेव के अनेकानेक आशीवापद, अनन्त अपार पे्रम, दया-करुणापूणप कृपा-वषपण िोता रिा िै, उसके चलए आज चशष्यत्व के बीस वर्षोंपरान्त उनके िरणारचवन्द में साभार सादर श्रद्धांजचल अचपपत करता हाँ। भगवान का मैं अत्यन्त धन्यवादी हाँ। उन्ीं ंकी दया-कृपा से मुझ जैसे अपात्र का जीवन गुरुदेव का चदव्य साचन्नध्य- सत्संग प्राप्त कर आध्यास्तत्मक रूप से सुसम्पन्न हुआ।

लगभग एक वषप पूवप सन १९६२ में दचक्षणीय पचवत्र तीथप स्थलों ंकी यात्रा िेतु आश्रम से मैंने प्रस्थान चकया था। गुरुदेव की कृपा के फलस्वरूप अनेक तीथो का दशपन-भ्रमण कर िुका हाँ। बहुत कुछ उपलस्तब्ध हुई, पयापप्त सीखने को चमला तथा अन्तमुपखी साधनामय जीवन व्यतीत करने का प्रयास भी रिा। अचधकतया मौन िी रिता था। गुरुदेव ने इस शरीर की समूपूणप देखभाल की िै। मैं नदी तट पर नीरव एकान्त स्थान पर हाँ। अब मेरे मन में आश्रम पहुाँिने की अन्तःपे्ररणा प्रबल िो उठी िै। मैं गंगा मैया के दशपनाथप लालाचयत हाँ। गुरुदेव को
चिदानन्द आत्मकथा

३९ तो मैंने अपने हृदय-चसंिासन पर चवराचजत चकया हुआ िै, परन्तु गंगा जी के दशपन तो विााँ पहुाँिकर िी िोंगे। यि ईश्वर की इच्छा िी प्रतीत िोती िै चक पुनः उत्तर चदशा की ओर गमन चकया जाए। अतएव मैं चकसी समय भी विााँ पहुाँि सकता हाँ।

तारीख और समय आचद के चवषय में मुझे कुछ ज्ञात निीं।ं अचनचित िै। परमात्मा िी िमारे आन्तररक चनयन्ता एवं चनदेशक िैं। विी िोगा जैसा वे िािते िैं। वे मेरे संिालक िैं, जब िािेंगे मुझे यिााँ से ले जायेंगे। इसे दैवी योजना, ईश्वरेच्छा किंगे या गुरुदेव का सत्संकल्प; (इस सेवक के चलए दोनों ंसमान िी िैं) कोई रिस्यमयी शस्ति तो अवश्य िै, चजसके अनुसार सब संिाचलत िोता रिता िै। यचद कोई चनरचभमानी िोकर पूणप समपपण करता िै तो यिी शस्ति पूणपरूपेण उसका संिालन करती िै। गंगा मैया की तथा गुरुदेव के श्री िरणों ंकी सुफुरणा भी जब मेरे मस्तस्तष्क में िोती िै तो मेरा हृदय िषापचतरेक से पुलचकत िो उठता िै। वे मुझ जैसे मूढ़ को भी आशीवापचदत करते रिते िैं। आप सबके दशपन की उत्सुकतापूवपक प्रतीक्षा में -

चिदानन्द हाँ ! ॐ


चिदानन्द हूँ ॥
ॐ

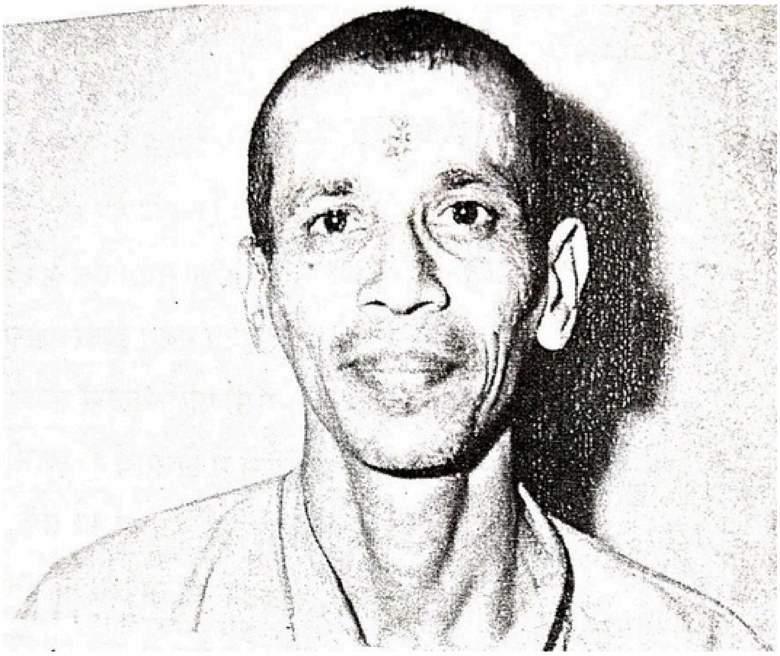
श्री गुरुदेव की मिासमाचध के उपरान्त

"समिु-तट से लगभग पांन्छिः िजार फीट की ऊाँिाई पर शीतल और शान्त स्थान मसूरी पहुाँिने के चलए मैं सीधे दिेरादून की ओर शीघ्रतापूवपक िल पड़ा। विााँ रिते हुए अकस्मात िौथे िी चदन गुरुदेव के श्री िरण-दशपनों ंकी अप्रचतरोध्य कामना एकाएक मुझे आश्रम में खींि लाई। आश्रम में कुछ समय रुक कर गुरुदेव के दशपन-चमलनोपरान्त मेरे लौटने के समय, मुझे गुरुदेव की गम्भीर रुग्णावस्था के चवषय में सूचित चकया गया। मैंने अपना प्रस्थान स्थचगत कर चदया तथा इस आशा से मैं रुक गया चक गुरुदेव के स्वास्थ्य लाभ िोने पर चफर चवदा लेकर एकान्तवास के चलए िला जाऊाँगा। जानते िैं चफर क्या हुआ? जब िॉक्टर पुनसुपधार की बात सिो रिे थे, स्वास्थ्य लाभ िोता देख रिे थे, तो २४ घंटे के अन्दर िी िालत चबगड़ती चदखाई पड़ी, स्तस्थचत में पररवतपन आ गया, और सदा-सदा के चलए अपनी आाँखें मूाँद कर गुरुदेव परम तत्त्व में चवलीन िो गये; और मेरी चनयचत ने मुझे इस चवषम अकल्पनीय पररस्तस्थचत में पहुाँिा चदया।

तत्काल िी आश्रम के मित्त्वपूणप कायों की व्यवस्था का दाचयत्व मेरे कन्धों ंपर आ गया। कायप-बाहुल्य की व्यस्तता इतनी अचधक बढ़ गयी चक आश्रम से सायं भ्रमण िेतु भी जाना असम्भव सा िो गया। सवोपरर मित्त्व की बात तो यि थी चक संस्था का न्यासी मंिल दृढ़ चनियी था चक संस्था का अध्यक्ष पद मुझे िी सम्भालना िोगा। और हुआ भी विी। प्रन्याचसयों ंकी एक बैठक हुई चजसमें मुझे िी परमाध्यक्ष मनोनीत चकया गया। उन सबकी प्ेरम भरी चनष्ठा के सामने चववशतावश मुझे सब स्वीकार करना पड़ा। समूपूणप स्तस्थचत को समझाना असम्भव प्रतीत िो रिा िै। चवश्ल्ेषण निीं ंकर पा रिा। आश्रम की व्यवस्था संिालन का कायप सिज- सुिारु रूप से िोते रिने का प्रयास कर रिा हाँ। बहुत सी आवश्यक बातें िैं चजन पर मुझे ध्यान केस्तन्द्रत करना िै। संस्था के कानूनी मामले, वैधाचनक चनयम-नीचत, अभ्यागतों ंका मागप-दशपन, अन्ेतेवाचसयों ंका पथ-प्रदशपन, िहुाँ ओर से एकचत्रत पत्र। ऐसी स्तस्थचत में पत्रािार के चलए तो समय चनकाल पाना सम्भव िी निीं।ं"

"व्यविारतः, चपछला समूपूणप वषप एक प्रकार से अज्ञात संिार में िी व्यतीत िो गया। तत्पिात अन्तःप्ेरेरणा िोने पर मौन-ध्यान प्रशास्तन्त के चलए मेरी अचभलाषा-चजज्ञासा एक अनजानी चदशा की ओर मुझे ले गयी। एकान्त स्थान- वास िेतु ऊाँिाई पर पहुाँि गया था। चकनुतु दैवी योजना कुछ और िी थी जो मुझे परम श्रदे्धेय गुरुदेव के श्री िरणों ंमें वाचपस ले आयी। चवदेश से लौटने पर मुझे अप्रत्याचशत पररस्तस्थचतयों ंका सामना करते रिना पड़ा चजसकी मैंने कभी कल्पना भी न की थी। स्तस्थचत में पूणपतया अचनियपूणप पररवतपन आ गया। एक के बाद एक अचनचित घटना–क्र में पड़ते-पड़ते अचत व्यस्त िोता गया। ईश्वरेच्छा किें या गुरुदेव का संकल्प, कुछ भी कि सकते िैं; ऐसी-ऐसी पररस्तस्थचतयााँ सामने आयीं ंजो मेरे चलए पूणपतः अकल्पनीय थीं;ं चजन्ें समझ पाने में असमथप हाँ। न्यासी मंिल द्वारा परमाध्यक्ष पद जो सौंपा गया, उसका योग्यतापूवपक चनवपिन कर सकूाँ, इसके चलए आपके शुभाशीवापद, शुभाशीषं तथा आशीवपिन की अपेक्षा िै, तभी आप पूज्यजनों ंके िाचदपक अचभनन्दन सफलीभूत िोंगें। गुरुदेव से मेरी एकमात्र यिी प्राथपना-यािना िै चक चवशुद्ध भाव से सेवा करने, कतपव्यचनष्ठा से कमप करने तथा समुचित रीचत से जीवन-यापन करने में मुझे समथप करें। वे इस सेवक को चवनम्रता, चनःस्वाथपरता तथा पूणप समपपण की सामथ्य प्रदान करने से वंचित न रखें।"

परमाध्यक्षीय प्रबोधन



(२३-८-१९६३ को मुख्यालय आश्रम के अन्तेवासी साधको ांको डदये गये प्रर्म प्रबोधन का सिाांश)

सौभाग्यशाली अमर आत्मन !

गुरुदेव-स्वरूप चदव्य आत्मन !

आप सबमें अन्तचिपत चदव्यता को मेरे प्रणाम। आज का श्री गणेश- पूजा-चदवस, पावन चवनायक ितुथी चदवस, चवजयदशमी की भााँचत िी मंगल कायों का शुभारम्भ चदवस माना जाता िै। अब िमारे बिी गुरुदेव सशरीर उपस्तस्थत निीं ंिैं। उनका पुण्य उत्तरदाचयत्व कतपव्य कमप, िम सबको सस्तिचलत रूप से योग्यतापूवपक सम्पन्न करना ी, जो उनके समय िम पर निीं ंथा, उसी का चनवपिन करने से सम्बस्तन्धत अपने आन्तररक भाव-चविार आपके समक्ष प्रसुतुत करना िािता हाँ।
चिदानन्द आत्मकथा

४३ इस आश्रम में िम सब लोग व्यापक रूप से देश-चवदेश के चवचभन्न भागों ंसे आए हुए िैं। यद्यचप सबकी आस्थाएाँ, भाषाएाँ, चविारधाराएाँ, रीचत- ररवाज इत्याचद अपने-अपने देश के अनुसार चभन्न-चभन्न िैं, तथाचप पूवप जन्म- कृत कमों के फलस्वरूप चनयचत द्वारा यिााँ समस्तित रूप से चनवास करते हुए एकसूत्र में बााँधे हुए िैं। सबके अस्तस्तत्व गुरुदेव से िी संयुि िैं। गुरुदेव िी िम सबके मूल केन्द्र िैं, िमारे जीवनाधार िैं।

मि सबके पारस्पररक सियोग के पररणामस्वरूप िी गुरुदेव का मिान चमशन, 'चदव्य जीवन संघ,' समृस्तद्ध तथा उत्कषप को प्राप्त हुआ िै, चजसके द्वारा चपछले कई वषों में असंख्यासंख्य साधक, भिजन, गुरुदेव के चदव्योपदेशों ं से लाभास्तित हुए िैं। अपने सत्संकल्प, कचठन तपस्या, तीव्र त्याग-वैराग्य द्वारा, तथा इससे भी बढ़कर अपने अचवरल, अजस्र, अथक प्रयास द्वारा िी गुरुदेव ने मिान उपलस्तब्ध प्राप्त की; जो अचवस्मरणीय िै। िम सबकी अपेक्षा चजन्होंनें अकेले िी कठोर पररश्रम द्वारा चनष्ठापूवपक, कतपव्य कमप सम्पन्न चकए, वे केवल गुरुदेव िी थे। उन्ीं ं

के संकेस्तन्द्रत प्रयास का उत्तमोत्तम पररणाम था, जो उन्ोंनें प्राप्त चकया, अन्यथा सब असम्भव ि◌ी था। चजस चवशेष क्षण में जो कायप वे प्रारम्भ करते, उसे पूरी लगन से, मनोयोगपूवपक समूपूणप करते और उसे सवोत्तम रूप दे देते। अपनी कायप-प्रणाली के चवषय में, बहुधा बताया करते थे चक वे अपने मस्तस्तष्क के सूक्ष्माचतसूक्ष्म अनेक कोष्ठों ◌ंमें से चवषय सम्बस्तन्धत एक कोष्ठ को बड़ी तत्परता से खोल लेते, उसी एक चवशेष कायप को पूणप एकाग्रता से करते; इसके
समूपूणप ि◌ो जाने पर वि कोष्ठ बन्द कर देते। चफर दूसरा खोलते, अवधानपूवपक उस कायप को सम्पन्न करते; चफर विी क्रम ि◌लता रिता। यि आश्रम, चवशाल संस्था, उन्ीं ◌ंके अनेक वषों के अनवरत, अचवराम, सतत प्रयासों,◌ं अनन्य चनष्ठा के फलस्वरूप ि◌ी चनरन्तर प्रगचतशील रिी।
इस आश्रम के दो पिलू ि◌ैं, जो परस्पर अनुप्राचणत ि◌ैं। प्रथमतः ि◌म सब लोग यिााँ साधक रूप में आध्यास्तत्मक प्रगचत ितेु आश्रम के सानुकूल सास्तत्त्वक वातावरण का लाभ उठाते हुए साधना-रत रिते ि◌ैं। दूसरा पिलू ि◌ै-एक चवशाल इकाई के रूप में चदव्य जीवन संघ, चशवानन्द आश्रम में ि◌म चनवास करते ि◌ैं। इस दृचष्ट से ि◌म सब गुरुदेव के सौभाग्यशाली सेवक ि◌ैं। इस प्रकार ि◌मारे व्यस्तित्व में ये दोनों ◌ंपक्ष अन्योन्याचश्रत ि◌ैं। इस संस्था के माध्यम से गुरुदेव ने न केवल भारत में अचपतु चवदेशों ◌ंमें भी अनचगनत मानव जीवन में शास्तन्त, प्ेरेरणा, सान्त्वना प्रदान कर उनका उद्धार चकया। आश्रम में ि◌ी स्थायी रूप से चवराचजत रिते हुए वे सब स्थानों ◌ंमें, सूक्ष्म रूप द्वारा सचक्रयतापूवपक कायप करते रिे। उस समय भी आश्रम चवशाल स्तर पर गुरुदेव का ि◌ी अचभन्न रूप माना जाता था, और अब भी गुरुदेव के अन्तधापन ि◌ोने पर, उनका ि◌ी साकार रूप ि◌ै।

बहुसंख्यक भि-साधकों ◌ंके चलए गुरुदेव का सत्साचित्य उन्ीं ◌ंका प्रचतरूप रिा। उनके प्ेरेरणाप्रद सदुपदेश अप्रत्यक्ष रूप में गुरुदेव स्वयं ि◌ी थे। गुरुदेव के इस चवसूतृत-चवशाल स्वरूप का अनुभव समग्र चवश्व ने चकया। उनकी आध्यास्तत्मक चशक्षाओं ◌ंने साधकों ◌ंके अन्तः स्पशप द्वारा उनके आन्तररक जीवन को पररवचतपत कर समूपूणप व्यस्तित्व को चदव्य बनाने का नवीन दृचष्टकोण चदया।

ि◌मारे चलए तो गुरुदेव प्ेरेरणास्रोत के रूप में प्रत्यक्ष चवद्यमान रिे। उनकी समुपस्तस्थचत में ि◌में उनका चदव्य सत्ंसंग-लाभ प्राप्त हुआ, अब तो वि अतीत का चवषय बनकर रि गया। यि वास्तचवकता ि◌ै। केवल ि◌मारे चलए ि◌ी निीं,◌ं बहुत से साधक-अनुयायी जो सत्ंसंग लाभ के चलए यिााँ आया करते थे, उन्ें भी अब गुरुदेव के सत्ंसंग का अभाव खटकेगा। चनःसन्ेदि गुरुदेव की अनुपम कृचतयों,◌ं पुस्तकों,◌ं पररपत्रों,◌ं पचत्रकाओं ◌ंके रूप में उनकी चशक्षाओं–चनदेशों ◌ं द्वारा उनका सत्ंसंग चमल जायेगा। परनुतु साधक-चजज्ञासुओं ◌ंके चलए इतना ि◌ी पयापप्त न ि◌ोगा और न ि◌ी इससे वे सनुतुष्ट ि◌ो पायेंगे। पररणामतः प्रचतचनचध-रूप में गुरुदेव के चशष्यों ◌ंअथापत ि◌म सबसे उन्ें कुछ अपेक्षा रिेगी। अतः इस कतपव्य-धमप का चनवपिन करने के योग्य ि◌में बनना ि◌ोगा, गुरुदेव के ज्ञान को चवकीणप करने ितेु ि◌में माध्यम बनना ि◌ोगा।

श्री गुरुदेव के चशष्यों ◌ंअथापत ि◌मसे ि◌ी 'चशवानन्द आश्रम' की बास्तचवकता ि◌ै न चक मात्र बािरी ईंट-पत्थरों ◌ंसे चनचमपत इमारतों ◌ंसे। वसुतुतः ि◌म सबका प्ेरेमपूणप सौिादप-भाव चशवानन्द आश्रम की पििान ि◌ै। ि◌म चशष्यगण ि◌ी "चशवानन्द आश्रम" की आत्मा ि◌ैं। गुरुदेव के समय साधक-चजज्ञासुओं ◌ंके आध्यास्तत्मक मागपदशपन का दाचयत्व उन्ीं ◌ंके कन्धों ◌ं पर था। इस चवषय में उस समय इस दाचयत्व को गम्भीर रूप से ि◌मने कभी मिसूस निीं ◌ंचकया था। ि◌म बहुधा सोि लेते - "गुरुदेव तो यिााँ ि◌ैं, ये ि◌ी सबकी देख-रेख करते ि◌ैं। मागपदशपन का कायप कैसे भी ये सम्भाल लेते ि◌ैं।" लेचकन अब अकस्मात यि समूपूणप उत्तरदाचयत्व ि◌म सब पर ि◌ी आ गया ि◌ै। जो कायप उस समय गुरुदेव अकेले ि◌ी सम्पन्न कर लेते थे, अब विी ि◌म सबको चमलकर, एक ि◌ोकर के करना ि◌ै। अपने अपने कतपव्य कमों को ि◌में चनभाना ि◌ोगा। चजनसे ि◌म सब शारीररक, नैचतक एवं आध्यास्तत्मक रूप से अपने व्यस्तित्व के चवकास में लाभास्तित हुए, उन गुरुदेव के ि◌म ऋणी ि◌ैं। उन्ीं ◌ंका उत्तरदाचयत्व ि◌म सब पर ि◌ै; ि◌म में से प्रत्ेयेक को व्यस्तिगत तथा सामूचिक रूप सेइसका चनवपिन करते हुए अपना-अपना ऋण- शोधन करना ि◌ै। गुरुदेव के प्रचत आदशप चशष्यत्व का चनष्ठापूवपक

पालन करते हुए, सतत गुरु-सेवा को धारा प्रवि देकर चनरन्तर कृतज्ञता ज्ञापन करते रिना िोगा। अतः ि मारी चविारधारा केवल गुरुदेव की ओर िी अचभमुख रि। श्रद्धापूररत हृदय से यिाना-प्राथपना करें चक िम इस नये उत्तरदाचयत्व को चनभाने में सदा सवपदा सफलता-पथ पर आरूढ़ रिें।

श्री गुरुदेव िमें आशीवापचदत करें आध्यास्तत्मक प्रिार-प्रसार कायप के चलए और साथ िी िमारा जीवन उनके द्वारा चनदेचशत पथानुसार िी िलता रि, ताचक िम अत्यन्त प्रभावशाली आदशप चदव्य जीवन-यापन कर सकें, तभी िम चमलकर एक दूसरे के प्रेरणा-स्रोत एवं शस्ति-स्रोत बन पायेंगे।

यिाँ आपके सिुख चविार प्रसुतुत करने वाला मैं कोई देव पुरुष निीं ंहाँ, मैं भी आप िी की तरि एक मानव िी हाँ। आश्रम में िम सब एक आध्यास्तत्मक संयुि पररवार के रूप में चनवास करते िैं। गुरुदेव के चतरोधान से िमारी आन्तररक चनकटतम एकता में कोई अन्तर निीं ंआना िाचिए बस्तल्क वि पिले से भी अचधक सुदृढ़ िोनी िाचिए; यि अत्यावश्यक िै। पिले गुरुदेव ने िी िम सबको एकता के सूत्र में बाँधा हुआ था, लेचकन अब िमें स्वयं आन्तररक तथा बाह्य अवरोधों ंकी परवाि न करते हुए एकता स्थाचपत करने का प्रयास करना िोगा। यि एकत्व गुरुदेव के प्रचत िमारे चनिल प्रेम का, अटूट चनष्ठा का, गुरु-भस्ति का प्रतीक िोते हुए आभार प्रकटीकरण का भी एक रूप िोगा। गुरुदेव के आध्यास्तत्मक चमशन के प्रचत सेवा, भस्ति, ज्ञान-प्रसार के मिान लक्ष्य का पुनीत कायप सदैव चनरन्तर प्रगचत पथ की ओर अग्रसररत करना िोगा।

श्री गुरुदेव किते थे, "अतीत को चवसूमृत करें। क्षमा करें, और भूल जायें।" चपछले बीस वषों में, अपने जीवन में अगर मुझसे मन-विन-कमप द्वारा आप सबमें से चकसी एक को भी कोई कष्ट पहुँिा िो, तो उसके चलए मैं क्षमा िािता हाँ। मेरा सदैव सबको चित पहुँिाने का प्रयास रि। चकसी को कष्ट पहुँिाने का आशय कभी न था। गुरुदेव का व्यस्तित्व असाधारण था। वे कोई सामान्य व्यस्ति तो निीं ंथे। अतः उन्ोंने िम सब पर जो अपनी अचमट छाप छोड़ी ै, वि कोई सामान्य निीं ंिै। गुरुदेव के चदव्य सम्पकप में रिने का िम सबको अपूवप सौभाग्य चमला। िम में से प्रत्येक साधक-चजज्ञासु का उन्ोंने चवशेष ख्याल रखा। िमें उनके चदव्य सम्पकप का चवशेषाचधकार प्राप्त रि। उन्ीं ं के चदव्य चनदेशानुसार िमारे व्यस्तित्व चनचमपत हुए। िम सबके भीतर चद्वचवध प्रकृचत िै। एक िमारा अपना जन्मजात स्वभाव, जैसे चक िम िैं। दूसरा िमारे अन्दर वि अंश जो गुरुदेव द्वारा चनदेचशत तथा चनचमपत िै और इसी रूप में वे स्वयं चवद्यमान िैं, उनकी िी समुपस्तस्थचत िै। गुरुदेव िमारे अन्तस में सदा सवपदा चवराचजत िैं। िम उन्ें सतत प्रचतपल याद रखें; एक क्षण भी भूलें निीं।ं उनके उच्चादशों ंके प्रचत सत्यचनष्ठ रिें।

श्री गणेश पूजा के इस मांगचलक चदवस, चवनायक ितुथी पर नये दाचयत्व को संविन करने के आरम्भ से पूवप, मैं आप सबसे क्षमा िािता हाँ। अपने जीवन में अगर मैंने कभी चकसी को कोई ठेस पहुँिाई िो, अप्रसन्न चकया िो, तो मैं क्षमा प्राथी हाँ। इस समय तो गुरुदेव की संस्था के मित कायप को प्रगचतशील बनाने िेतु मैं अत्यन्त उतुसुक एवं उत्कस्तण्ठत हाँ। अब तो िम सबके चलए यिी मिान कतपव्य-कमप िै, सवोपरर कायप िै- इसी को िमें प्राथचमकता देनी िोगी। मैं एक संन्यासी हाँ। आप में से अन्य भी कई संन्यासी िैं। िमें आत्मचनष्ठ बनना िै। अपने तन-मन या जगत पर िी कैवल िमारा ध्यान केस्तन्द्रत न रि; िमारी पूणप चनष्ठा अपनी आत्मा पर िी िो। िम आत्म-स्वरूप में सदा संस्तस्थत रिें। एक साधु-संन्यासी को बाह्य चक्रयाओं ंसे चनचलपप्त रिकर परम सत्ता के प्रचत िी पूणप श्रद्धा रखनी िै।

परनुतु, गुरुदेव की आध्यास्तत्मक सन्तान िोने के नाते उनके आध्यास्तत्मक ज्ञान-प्रिार-प्रसार का दाचयत्व जो िमें सौंपा गया िै, उसको सवापचधक प्राथचमक मित्त्व देना िै। आचद गुरु शंकरािायप के इस श्लोक में यि स्पष्टतः प्रकचटत िै-

भावाद्वैतां सदा कुयात् डियाद्वैतां न कडहिडचत्।
अद्वैतां डत्रषु लोकेषु नाद्वैतां गुरुणा सह ।। (तत्त्वोपदेशः - ८७)

"चसद्धान्त में, चविारों ंमें सदैव अद्वैतवादी बनें, लेचकन व्यविार में, चक्रयाओं ंमें निीं।ं तीनों ंलोकों ंको आप अद्वैत दृचष्टकोण से देखें, लेचकन अपने गुरु के प्रचत द्वैत का िी सम्बन्ध रखें।" अतएव गुरु सेवा िी िमारा सवोपरर
मित्त्वपूणप कतपव्य िै।
आज के सन्दभप में िम सब नवीन दृचष्टकोण से आदशप जीवन-यापन का नव शुभारम्भ करें। अपने कमप कौशल से चदन-प्रचतचदन प्रगचत पथ पर अग्रसर िों।ं चनरन्तर उत्थान की ओर बढ़ते रिें। चनकट भचवष्य भी प्रकाशमय उज्ज्वल िो। गणेश भगवान 'चवघ्न-चवनायक' तथा 'चसस्त्तद्धदायक' िैं। िम उनका पूजन करते हुए, प्राथपना-याचना करें चक मिारे उद्देश्य की पूचतप िेतु समस्त चवघ्न- बाधाओं ंको दूर कर प्रत्येक पग पर िमें सफलता-चसस्त्तद्ध प्रदान करें। एक साधक के जीवन में तो गुरु-कृपा िी प्रमुख िै। गुरु-कृपा से िी समस्त चवघ्न-बाधाओं ंकी चनवृचत्त तथा चसस्त्तद्ध-साफल्य प्राप्त िोता िै। इसीचलए िम गणेश जी से गुरु- कृपा-वषपण के चलए प्राथपना करते िैं। ईश्वर करें, गुरुदेव का अनुग्रि, सिायता रूप में सदैव िमारा पथ-प्रदशपन करता रिे।

अब मैं भी अपने चविारों,ं कथनों ंएवं चक्रयाओं ंके प्रचत सदैव सजग और सतकप रहूँगा, चक वे सदा संस्था के कल्याणाथप िी िों।ं आज की मेरी अचभव्यस्त्ि, मेरी सोच-समझ, चविार शैली सप्ताि पूवप जैसी निीं ंिै। अब उसे नया रूप चमला िै। इस मनोभाव को बनाए रखने के चलए सावधान रिने में भगवान मेरी मदद करें।

मेरी िाचदपक अचभलाषा िै चक गुरुदेव के मित कायप को सम्पन्न करने िेतु िमारा पारस्पररक सौिादप-भाव रिे। आप में से िर एक का प्रेम और भावपूणप सियोग चमलता रिे। यिी मेरी मनोकामना िै। आपके प्रीचतपूणप आग्रि से, मुझे परमाध्यक्ष पद का उत्तरदाचयत्व सौंपा गया; गुरु-इच्छा के समक्ष, अपने को समचपपत करते हुए इसे स्वीकार कर चलया गया िै। अब आप सबका भी तो सियोग अपेचक्षत िै, लोककल्याणाथप इस कतपव्य-धमप को चनचवपघ्न जारी रखने िेतु गुरु-भस्त्ि तथा चवश्वप्रेम के इस मित कायप को सुसम्पन्न करने में िम सबका भ्रातृ-भाव अचनवायप िै।

श्री गुरुदेव की संस्था-सेवा का पुनीत दाचयत्व िम पर आ जाने से अब अपने व्यस्त्िगत या चनजी जीवन का कोई अथ प निीं ंरिा। यि गुरुदेव की सेवा के प्रचत पूणप समचपपत, विनबद्ध िो गया िै। िम सबके चलए 'चदव्य जीवन संघ' संस्था गुरुदेव का िी अचभन्न रूप िै।

लोकाः समस्ाः सुस्मिनो भवन्तु
असतो मा सद्गमय
तमसो मा ज्योडतगिमय
मृत्योमाि अमृतां गमय ।

गणेश पूजा के इस पुनीत चदवस पर यि प्राथपना प्रस्तुत िै। िमारी आन्तररक जीवन-शैली पूणप रूप से 'असतो मा सद गमय, तमसो मा ज्योचतगपमय, मृत्योमाप अमृतं गमय" के अनुसार िो। िम असत से सत की ओर, अन्धकार से प्रकाश की ओर, मृत्यु से अमरत्व की ओर बढ़ें; और बाह्य जीवन में "लोकाः समस्ताः सुस्त्खनो भवन्तु "समग्र चवश्व सुखी रिे;" ऐसा िमारा मूलमन्त्र िोना िाचिए। िम सबका जीवन गुरुदेव के गौरव की वृस्त्तद्ध के चलए िी िो। सवपकल्याणाथप िम सस्त्िचलत रूप से कायप में जुट जायें। सेवा क्षेत्र में "और भी उत्तम या श्रेष्ठ कायप करें; आगे बढ़कर रिें" - यिी िमारा दृढ़ संकल्प, िमारा आदशप वाक् िोना िाचिए।

धैयपूवपक चविारों ंके श्रवण िेतु आप सबको िाचदपक धन्यवाद। श्री गणेश-पूजन की पूणापहुचत से पूवप िम सब कुछ क्षण मौन ध्यान करें।

ॐ तत्सत ब्रह्मापपणमसुतु !

पत्र एवं पत्रोत्तर अंश (पचिम की यात्रा-अवचध में)

(श्री गुरुदेव को पत्र)

नूयूयॉकप
शचनवार, २१ नवम्बर १९५९

आराधनीय सद ्गुरुदेव के श्री िरणों ंमें आपके सेवक के श्रद्धापूररत प्रचणपात। अनेकानेक सादर साष्टांग दण्डवत ।

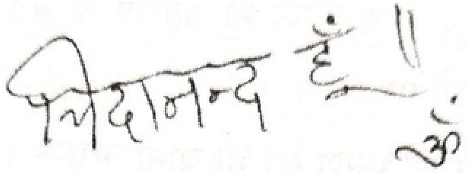
ॐ नमो नारायणाय।

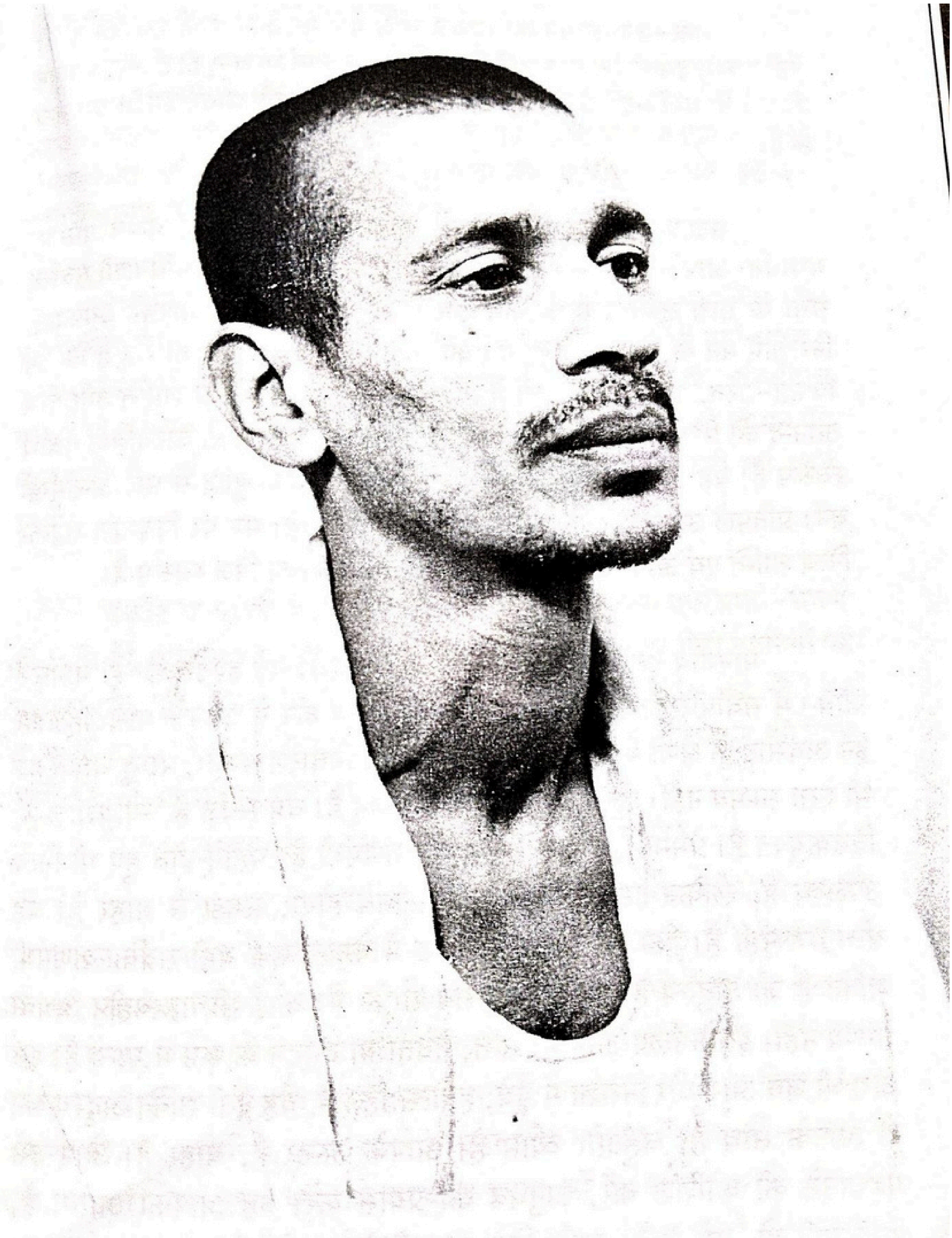
श्रद्धेय श्री स्वामी जी मिाराज के मंगलमय शुभाशीवापद से यिााँ पहुाँिने के पूवप पन्द्रि चदन की यूरोप यात्रा सकुशल रिी। मेरा स्वास्थ्य ठीक िै। श्री चवष्णु स्वामी जी सहृदयता और सदयतापूवपक मेरी सुख-सुचवधा की पूणपतया देख-रेख कर रिे िैं। शीत ऋतु के प्रारम्भ िो जाने से सदी यिााँ अच्छी खासी िै, परन्तु सिनीय िै।

अब तक मेरे मन में यिााँ के अपने कतपव्यकमों की योजना सुस्पष्ट निीं ंिो पायी िै। गुरुदेव के िरणारचवन्द में मेरी चवनम्र प्राथपना िै चक सदा सवपदा मेरे अंग-संग रिते हुए यिााँ के आकांचक्षयों ंकी आध्यास्त्मक सेवाथप मेरा पथ-प्रदशपन करते रिें। इस भूचम में चनवचसत आपकी सन्तान की सेवा-पूजा चनवेचदत करने िेतु मैं अपने को योग्य चसद्ध कर सकूाँ। कुछ अनुरोध चलखकर एक अलग सूिी तैयार की िै। गुरुदेव से सानुरोध प्राथपना िै चक वे आवश्यकतानुसार इस सेवक को यथासम्भव, यथा समय अपने अनुदेश देते हुए कृताथप करें।

श्री िरणों ंमें सेवक

स्वामी चिदानन्द ॐ





भिवृन्द को पत्रों ंद्वारा चदग्बोधन

मन्त्र-जप-साधन का सम्बल साथ िोने पर आप कभी एकाकी िो िी निीं ंसकते। इसको चनचित जानें चक मन्त्र रूप में स्वयं भगवान िी िैं और भगवान िी मन्त्र िैं। मन्त्र सदा-सवपदा आप में समाचित रिे। आपके जीवन का आधार मन्त्र िी िै।

ॐ

सदा प्रसन्नचित्त रिें, प्रफुल्ल रिें। सिासी बनें। मैं तो सदैव आपके पास हाँ। यथाथपतः आपके अन्तर में चवद्यमान अन्तवापसी अन्तयापमी की अचवनाशी सवोच्च सत्ता के साथ सूक्ष्मतः मैं अचभन्न रूप से संयुि रिता हाँ। आपकी आपदाएँ, चनराशाएँ मन के िी चवकार िैं, मन का बाह्य स्वभाव िै। सत्य तो यि िै चक इन चवपदा-ग्रस्त, अवसाद के क्षणों ंमें भी आपके अन्तरतम में चिर शास्तन्त और परम आनन्द की स्तस्थचत िोती िै। इसे जानें और समझें। यिी आपका वास्तचवक यथाथप स्वरूप िै। यि अन्तर का चनत्य संस्तस्थत स्वभाव िै। मन-बुस्तद्ध से परे, अन्तमुपखी बनें। प्रचतपल आप इस एकरस शास्तन्त में चनमस्तज्जत रिें। मन पर चनयन्त्रण रखकर चनत्य शास्तन्त एवं आनन्द की अवस्था में रिें। यिी आपका चनज स्वरूप िै।

ॐ

मानवीय इच्छा से ऊपर िै, भगवद इच्छा। यि ईश्वरेच्छा िी मानव- जीवन में सवोपरर िै। सम्भव िोता तो मैं व्यस्तिगत रूप से आपके पास पहुाँिकर इन अवसाद के क्षणों ंमें चनराशा के अन्धकार का चनवारण करता, परन्तु िािते हुए भी ऐसा सम्भव निीं।ं ईश्वरेच्छा की शस्ति मिान िै। वि सवपज्ञ िै, न्यायशील िै, चववेकयुि िै। प्रेममयी, दयामयी तथा कल्याणमयी िै। मिान िोते हुए भी चनत्य उपलब्ध िै, लेचकन इसका गूढ़ और रिस्यमय िोना, समझ से बािर िै। यि बोधगम्य निीं ंिै। चफर भी समूपूणप ब्रह्माण्ड में केवल एक यिी सवपकल्याणमयी शस्ति िै जो अतुल्य िै। इसके चलए सब समान िैं। कोई भी मित्त्वीन अथवा नगण्य निीं।ं इसके चलए आप भी सन्त, देवता या देवदूत के रूप में मान्य िैं। इस क्षण भी जब आप घोर चनराशा में िूबे, ितोत्साचित िैं, यि दैवी शस्ति अदृश्य रूप से आपके साथ िै। िहुाँओर व्याप्त िै। आपके अन्दर िै, बािर िै। आप उसे पिािनने की कोचशश करें, अनुभव का प्रयास करें। वि आपका आत्मा िै, अन्तपमुखी िो, उसे जानें। इसके चलए कुछ चवशेष करने की आवश्यकता निीं;ं केवल यि जानना अपररिायप िै चक चदव्य सत्ता की सवपत्र उपस्तस्थचत से सम्पकप करने में आपके चविारों ंकी शृंखला, कल्पनाएँ और अतीत की सूमृचतयााँ सब अवरोधक िैं। आप उस चदव्यता से चभन्न निीं ंप्रत्युत अचभन्न िैं।

ॐ

आत्मबोध के चलए अपेचक्षत िै- मन का सिज मौन तथा चविारों ंपर सिज चनयन्त्रण। इसके चलए मन और चविारों ंसे जूझने और उत्तेचजत िोने की कोई आवश्यकता निीं।ं कदाचप ऐसा न करें। व्यग्रता तथा अधीरता आपके उद्देश्य-प्रास्तप्त में बाधक चसद्ध िोंगे।

ॐ

चिन्तातुर न िों।ं सिज मन्द मन्द मुस्कान से अन्तर में आनस्तन्दत रिने का स्वभाव बनाएँ। चफर कुण्ठा और नैराश्य आपके पास फटक भी निीं ंसकते; आपका स्पशप भी निीं ंकर सकते; इन मनोचवकारों ंसे बिकर अपने 'वास्तचवक

स्वरूप' में संस्तस्थत रिने का भरसक प्रयत्न करते रिं। रुदन और उदासी तो मन की िालबाजी िै, िषप और िास्य आपका जन्मचसद्ध अचधकार िै। इसी का लाभ उठाएँ।

ॐ

प्रकृचत के प्रांगण में, बाग-बगीिों ंमें ई. एल. के साथ एक प्रातः - भ्रमण की स्मृचत मेरे सामने उभर उठी िै; धुँधले वातावरण में धरती पर चगरी टिचनयों ंपर आिनक पैर पड़ जाना, अत्यचधक ठंडी िवा का िलना, ओस की बूंदों ंका मिकना, पुष्प-पौधों ंके चनकट खड़े िोकर मौन प्राथपना के द्वारा भगवान की चदव्य उपस्तस्थचत की अनुभूचत करना। क्ा िी सुखद अनुभव था !

(अवसाद-ग्रस्, हतोत्साडहत एक माँ को)

यात्रा की व्यस्तता तथा लूि पस, असीसी तथा सन ज्योवान्नी (पादरे चपयो) इत्याचद सबके दशपनोपरान्त इस पचवत्र स्थान इज़रायल में पहुँिा हाँ। मैं आपको अवगत कराना िािता हाँ चक कल और आज भी आपका बेटा मेरे चविारों ंमें था, मेरी प्राथपनाओं ंमें भी शाचमल रिा। गेथ्सेमने के बाग में, ओचलव के पिाड़ पर, बैथलिैम के पचवत्र जन्म स्थान पर मनैं उसके कल्याण के चलए प्रभु से प्राथपना की। मैंने परमचपता परमात्मा से यािना और अनुनय चवनय की अपनी दया, करुणा, प्रेम-वषपण कर उसे सद बुस्तद्ध प्रदान करें ताचक वि अपने आप को समझ सके, जान सके और समुचित रािा पर आ जाये। उसे यि बताने की कृपा करें चक मैं सदैव उसके साथ हाँ; मेरे हृदय में उसके प्रचत अगाध प्रेम िै। वि ििा मुझे निीं ंजानता परन्तु आपके द्वारा मुझे उसकी पूरी ििान िै। मुझे उस पर चवश्वास िै। उसकी अधीरता, बेिैनी एक चदन समाप्त िो जाएगी और उसे स्पष्टतया एक नया दृचष्टकोण चमलेगा। सवपज्ञ प्रभु के चदव्य ज्ञानालोक से उसका मागप प्रशस्त िो। वि अपने आपको एकाकी न समझे। भगवान उससे इतना अचधक प्रेम करते िैं चक वि उसकी कल्पना भी निीं ंकर सकता। एक चदन वि उस प्रेम को अवश्य समझेगा। लेचकन तब तक उसे िर िाल में, प्रत्येक पररस्तस्थचत में पूणप रूप से सत्यवाचदता का पालन करते रिना िोगा। मुझे उस पर चवश्वास िै चक वि ऐसा अवश्य करेगा।

ॐ

करुणा-वरुणालय, सवपव्यापक, सवपशस्तिमान , सवपज्ञ प्रभु का अखण्ड ध्यान करते रिें तो जीवन के कष्ट-क्लेशों, ं तनावों ंतथा अन्यान्य घरेलू अथवा कायप-क्षेत्र की समस्त समस्याओं ंकी तरफ आपका ध्यान जायेगा िी निीं। ं यिी प्रभावशाली तरीका िै उन्ें चवचजत करने का। िम सदैव प्रभु से चनवेदन करते रिें। अपने जीवन में प्रभु को िी प्रथम और प्रधान स्थान पर मानें, तब जीवन-संग्राम में चवजय िी चवजय प्राप्त करेंगे। सामंजस्य, अनुकूलन, समायोजन आचद चसद्धान्तों ंका पालन कचठनाइयों ंका सामना करने, चनन्दा, अपमान आघात सिन करने में सिायक िोगा। आपका अन्तर प्रफुल्लता, चनभीकता, प्रशास्तन्त तथा सािस आचद गुणों ंसे पररपूणप िो। ईश्वर की आप पर कृपावृचष्ट रिे।

ॐ

मेरे शारीररक चवश्राम के वस्तुतः उदार तथा प्रेमपूणप प्रस्ताव के चलए आपको िाचदपक धन्यवाद के साथ कृतज्ञता ज्ञापन करता हँ। मुझे भी इसकी सख्त जरूरत मिसूस िो रिी िै, मेरा चदल भी यिी िािता िै। परन्तु ऐसी मनोकामनाओं ंका िर समय पूणप िो जाना सम्भव निीं। ं आपका धन्यवादी तो हाँ, परन्तु वतपमान पररस्तस्थचतयों ंमें

आध्यास्तत्मक ज्ञान-प्रिार-प्रसार सेवा में मुझे संलि रिना िी िै। गुरुदेव से मुझे वात्सल्य भावपूररत जो पत्र प्राप्त हुआ िै, आपको भेज रिा हाँ।

पत्र के अन्त तक चलखे गए अनुदेशों ंपर ध्यान देना आवश्यक िै। उनका आशय स्पष्ट िै, उनके आदेशों–ंचनदेशों ंका पूणप पालन चकया जाये। कम से कम इतना तो अवश्य िो चक सेवा कायप की बहुलता में भी चवश्रास्तन्त का समय अवश्यमेव चनकालना िाचिए। वाचपस आने की बात का आशय केवल शरीर का चवश्राम िी मुख्य िै। चवश्राम यिााँ सम्भव िै, तो सिो समझकर िी योजना बनानी िै।



मैं उनके ममतामय व्यविार से पूणपतया पररचित हाँ। अिूबर १९५९ में आश्रम से चवदा लेते समय भी उन्ोंनें सेवा कायप के बिी-बिी अन्तराल में चवश्रास्तन्त के चलए सुझाव-आदेश चदया था। चकन्तु उसका पालन करने में असफल रिा। उन्ोंनें किा, "दो या तीन सप्ताि सेवा कायोपरान्त एक सप्ताि अवश्यमेव एकान्त स्थान पर अज्ञातवास रूप में शरीर और मन को चवश्रास्तन्त प्रदान करें। चकसी से चमलें निीं, ं मौन रखें। चफर इसको दोिराया।" चकन्तु यिााँ के कायपक्रमों ंकी अटूट शृंखला में उस आदेश का पालन कर पाना कतई सम्भव न था। अब मुझे आशा िै चक आगामी दचक्षणी अमेररका के कायपक्रमों ंका आयोजन गुरुदेव के आदेशानुसार िी चकया जाएगा।

श्री गुरुदेव का पत्र

आदरणीय अमर आत्मन !

ॐ नमो नारायणाय।

श्री ऐन बररयन के पत्र से ज्ञात हुआ चक आपका स्वास्थ्य ठीक निीं ि।ै ऐसी स्तस्थचत में कृपया आप तुरन्त आश्रम वाचपस आ जायें। अपना ठीक-ठीक िाल मुझे चलखने की कृपा करें। आध्यास्तत्मक ज्ञान-प्रिार-प्रसार िेतु आपको विााँ यात्राएाँ बहुत करनी पड़ीं। कायपक्रमों की व्यस्तता में अपनी सेित का भी ध्यान निीं रखा। अभी आपको चवश्राम की अत्यचधक आवश्यकता ि।ै अब अपने कायपक्रमों में कुछ कटौती कर दें। िर पन्द्रि चदन के कठोर पररश्रम के उपरान्त चकसी एकान्त-शान्त स्थान पर कुछ चदन चवश्रास्तन्त लें। इससे साथ िी साथ आपको स्वास्थ्य लाभ िोता रिेगा। अमेररका में अब तक आपने िोयपप्रद सेवा-कायप कर चदखाया ि।ै साफल्य की यि एक मिान उपलस्तब्ध ि।ै मुझे आपके द्वारा भेजी सब भेंट चमलती रिीं, जो समयोचित अत्यन्त सिायप्रद रिीं।

मानव-जीवन की अथपवत्ता दया, करुणा, सेवा, आत्मत्याग, मुमुकुषुत्व तथा ध्यानाभ्यास में ि।ै मानव जीवन अत्यन्त दुरूि ि,ै यि वेदना, चवपदाओं चवपचत्तयों से भरा ि,ै चजसका पररणाम सफलता तथा मिान उपलस्तब्ध की प्रास्तप्त ि।ै व्रत-उपवास तथा आत्म-संयम द्वारा इस्तन्द्रयों पर चनयन्त्रण करना सिज िो जाता ि।ै मोक्ष प्रास्तप्त के चलए इच्छा-कामना-रचित जीवन सिायक िोता ि।ै मैं आपके सुस्वास्थ्य, दीघापयु, शास्तन्त तथा आत्म-साक्षात्कार के चलए चनत्य चनरन्तर प्राथपना करता रिता हाँ।

स्वामी चशवानन्द



भितवषि से पत्र-व्यवहिा - १९६२-६३

"आध्यास्तत्मक पररवार के आप सब से्नी जन, मेरे सूमृचत पटल पर िमेशा रि िैं। कल्पना तथा चविारों ंमें िी सबके पत्रोत्तर देता रिा, परन्तु लेखनी से असम्भव रिा। आपको आियप तो हुआ िोगा चक आस्तखर क्ा कारण िो सकता ै इस दीघप मौन का, जो इस स्वामी की ओर से उत्तर में एक भी शब्द या एक लाइन और शुभकामनाएँ तक भी आपको निीं ंभेजी जा सकीं।ं सदिारण के दृचष्टकोण से मुझे इसके चलए आपके समक्ष बार-बार क्षमा प्राथी िोना िाचिए। कुछ बातों ंमें तो मैं भी चववश िो जाता हाँ चकसी एक समय जो कायप सिजतया िो जाते िैं, दूसरे समय कभी-कभी उनको करने के चलए अपने को असमथप पाता हाँ। भारत आने से पूवप चवदेश में लगातार व्यस्तता में भी आप जैसे चजज्ञासुओं ंके साथ पत्र चलखकर सम्पकप बनाये रखा। परन्तु भारत में आकर बहुत िािने पर भी अपने प्रयास में असफल िी रिा।

चवदेश से २३ जनवरी १९६२ को मैं आश्रम पहुाँिा। दो मिीनों ंतक मैं एक भी पत्र निीं ंदेख पाया। गुजरात की चदव्य जीवन संघ-शाखाओं ंके अनुरोध पर एक अप्रैल को विााँ जाना पड़ा। मई मास के मध्य तक विााँ के आयोचजत कायपक्रमों ंमें व्यस्त रिा। १३ मई को दचक्षण के तीथप स्थलों ंकी यात्रा िेतु प्रस्थान चकया। यात्रा के दौरान, मैं चजस चजस जगि ठिरता हाँ, चकसी से टाइपराइटर लेकर केवल कुछ भिीं ंको िी प्रत्युत्तर देने का प्रयास चकया जा रिा ै। उसी क्रम में यि पत्र आपको भेजने में सफल िो पाया हाँ। यद्यचप इस अवचध में मैं मौन हाँ, तथाचप मेरे चविारों ंमें, प्राथपनाओं ंमें भी आप सदा िैं। मैं आपको भूला निीं।ं आप, आपके पररवार के सभी सदस्य तथा अन्य कई चजज्ञासु जन जो आप िी की भााँचत ईश्वर-प्रास्तप्त के चलए लालाचयत िैं, चकसी को भी चबलुकुल निीं ंभूल पाया। परमचपता परमात्मा से अपने हृदय-तल से प्राथपना-यािना करता हाँ चक अपने चदव्य ज्ञानालोक से आपका पथ आलोचकत करें, अपनी अगाध प्रेम-दृचष्ट, करुणा दृचष्ट से आपकी आत्मा की प्यास को तृप्त करते रिें।

अध्यात्म ज्ञान-रचित जीवन मित्त्विीन िै, अथपिीन िै, चनस्सार एवं नीरस िै। यिााँ तक चक चनष्प्राण िै। शास्तन्त का भी अभाव रिता िै। अपनी गृिस्थी के, समाज के तथा अन्य कई चक्रया-कलाप मानव के बाह्य जीवन-शैली के पररिायक िैं। चबना आभ्यन्तर आध्यास्तत्मक प्रगचत के वि उस सूने गृि की भााँचत िै चजसके अन्दर साज-सज्जा तो पूरी िै, पर रिने वाला कोई निीं,ं घर सूना पड़ा िै। जीवन की साथपकता तो अध्यात्म-पथ का पचथक बनने में, चजज्ञासु, मुमुकुषु, साधक बनने में िै। श्रद्धा, प्रेम, चनष्ठा, भस्ति, सेवा और साधना द्वारा अपनी आन्तररक चदव्यता को साकार रूप देना िै, आपके व्यस्तित्व से चदव्यता का िी प्रकटीकरण िोता रिे।

अब तो मैं अपने चलए ईश्वरेच्छा की िी प्रतीक्षा कर रिा हाँ। साधकों– चजज्ञासुओं ंको ईश्वर-इच्छा के अनुरूप िी जीवन व्यतीत करना िाचिए जो एक कचठनतम कायप िै, परन्तु िै यि अपररिायप। इसकी उपेक्षा निीं ंकी जानी िाचिए। ब्रह्म-ज्ञान, ज्योचत-दशपन तक यिी अभ्यास करते रिना िाचिए, परन्तु कष्टकर बात यि िै चक अध्यात्म ज्ञान-प्रकाश की तो केवल झलक मात्र दचशपत िोती िै, तब मानव-मन अधीर िोकर, सोिता िै चक एक साथ िी भरपूर प्रकाश चमल जाये चजससे जीवन के अन्त तक पथ प्रकाचशत िोता रिे। परन्तु मानव के िािने के अनुसार तो सब कुछ घचटत निीं ंिोता, चवचध का चवधान तो कुछ और िी िोता िै। नैराश्य के अन्धकार में साधक भटकता रिता िै, उसे िुाँ ओर अन्धेरा िी अन्धेरा चदखता िै। वि साधक सोि निीं ंपाता चक अन्धकार के बाद प्रकाश अवश्यम्भावी िै, जैसे रात के बाद चदन का आगमन। उसे अन्धकार में जीवन चबताना कचठन और कष्टकर लगता िै और वि धैयपिीन िो जाता िै। उसे चवश्वास निीं ंिो पाता चक आशा की चकरण अवश्य चदखाई देगी। अतः ईश्वर इच्छा िी सवोपरर िै।

जब मैं नवम्बर मिीने में आपके साथ था, एक छोटी-सी पुरानी पुस्तक जो आपके चलए छोड़ आया था, क्ा आपने उसमें फेनेलोन के पत्रों ंको देखा ? उरुगाय जाते हुए लन्दन में इसे चलया था। मैं उसे केवल एक बार िी देख पाया

था, और तुरन्त मुझे ऐसा भास हुआ चक वि पुस्तक आपको देनी िाचिए, चकसी अन्य को निीं। ं वि मेरे पास िी थी। जब मेरा सामान आवश्यकता से अचधक िो गया तो उसे आपको भेजना िी उचित समझा।

आशा िी निीं ंमुझे पूणप चवश्वास िै चक आपके पररवार में सब प्रकार से कुशल-मंगल िोगा। ईश्वर आपका मागप प्रशस्त करते रिें, आपको आनन्द, शास्तन्त, शस्ति प्रदान करते रिें। भारत को वापसी यात्रा में आयोवा जाने के चलए आप मुझे कार द्वारा िवाई अड्डा छोड़ने गये थे। रास्ते में आपके साथ आध्यास्तत्मक वाताप िोती रिी, विी सब पयापप्त िै। अब और अचधक मैं क्या कहाँ। भचवष्य के चलए मागप-दशपनाथप उस समय कुछ सुझाव दे चदये थे। आध्यास्तत्मक साधना प्रदशपन िेतु निीं ंऔर न िी घोषणा करने के चलए िै। यि तो जीवन जीने के चलए सियक िै, प्रचतपल अभ्यास का चवषय िै। जो कचठन निीं, ं सरल िै। शत- प्रचतशत लौचकक कामनाओं ंसे चनरासि रिकर परमचपता परमात्मा के प्रचत श्रद्धा, चनष्ठापूवपक भस्तिभाव से जीवन व्यतीत करना िै।

कामना-रचित जीवन वसुतुतः जीने योग्य जीवन िै। साधक के चलए इच्छा-आकांक्षा मृतुयुवत िै। जिाँ कामना िै, विाँ आत्मशस्ति क्षीण िो जाती िै। आत्म-चवकास में इच्छाएँ बाधक िैं। इच्छा रचित जीवन कतपव्य कमों की पूचतप में अवरोधक निीं ंिै। फल की आसस्ति रखे चबना चनष्काम रूप से कतपव्य कमप पूणप करें। चदव्य िेतना के भाव सचित चनष्काम कमों की पूचतप मोक्ष प्रास्तप्त का साधन िो सकती िै। पररणाम की आशा से रचित कमप मानव को बन्धन-मुि करता िै। ब्रह्ममय िोना िी जीवन की एकमात्र तीव्र आकांक्षा िोनी िाचिए, चजसकी पूचतप में मनोयोगपूवपक लगे रिना िाचिए। आत्म-साक्षात्कार प्रास्तप्त सास्तत्त्वक अचभलाषा िै। ऐसी चदव्य आकांक्षा का स्वागत करते हुए इस परमधन को अपने अन्तरतम के गुह्य कोष में संजोए रखें। भिीं ंद्वारा अपनी दैचनकियाप में चदव्यता को व्याविाररक रूप देना िै। इसके चलए बािरी चकसी चवशेष अभ्यास-साधना के िक्र में न फंसें। आदशप चदव्य जीवन िेतु आन्तररक जीवन-प्रवेश के चलए यद्यचप कुछ अभ्यास तो सियक िोते िैं चजन्ें व्यविार में लाना िोता िै। ये तीन बातें प्रमुख िैं, ध्यान देने योग्य िैं – अचभलाषा, अचभलाषा-पूचतप और अभ्यास। आशय तो तीनों ंका एक िी िै। चनकट भचवष्य में पत्र चलखना सम्भव िोगा चक निीं, ं मैं कुछ कि निीं ंसकता। वतपमान पररस्तस्थचत के अनुसार मैं इसे ईश्वर-इच्छा पर छोड़ता हाँ।

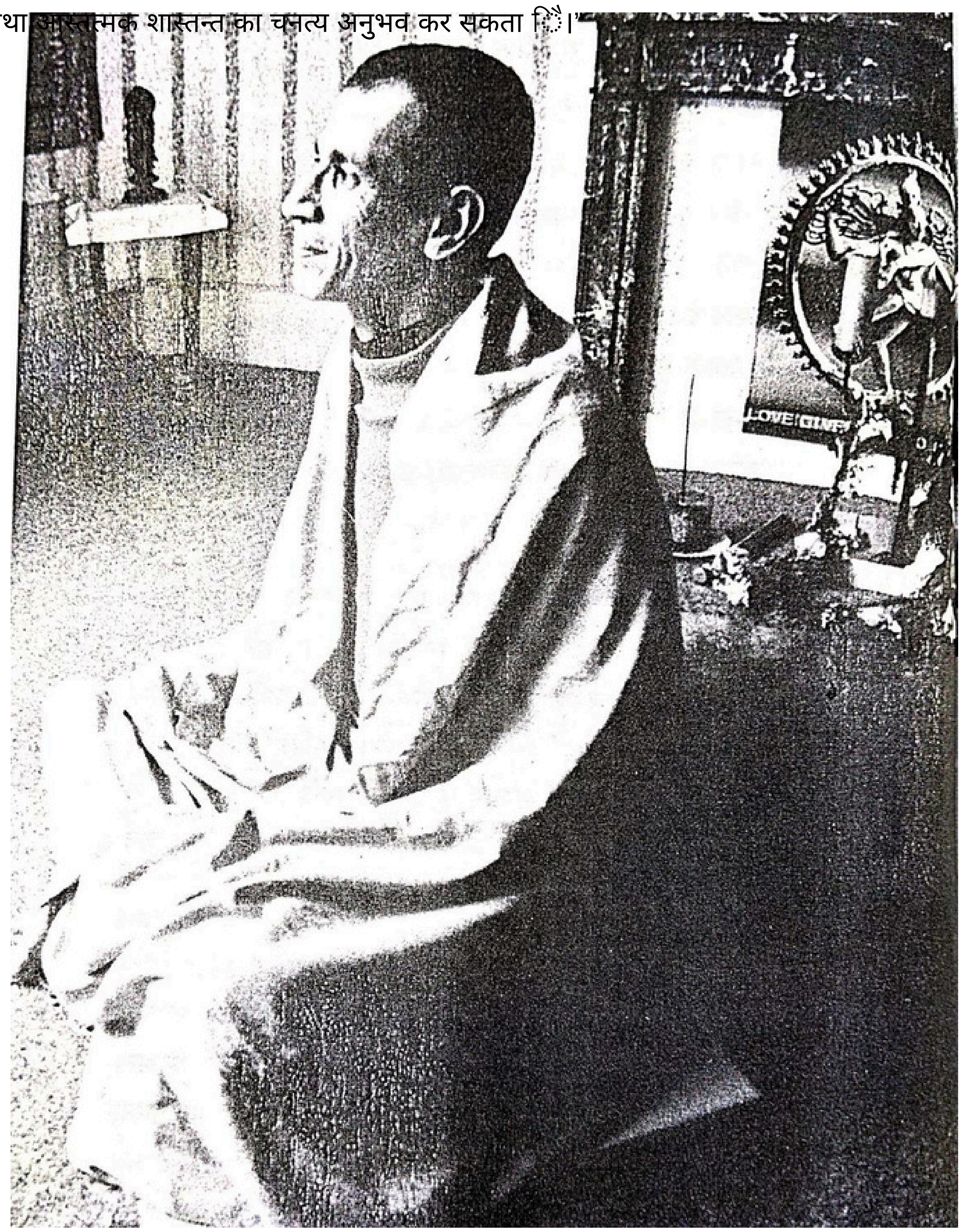
चप्रय आत्मन चबल ! आप भली-भाँचत जान लें चक गुरुदेव की कृपा आप पर प्रिुर मात्रा में िै। अपने मन्त्र जप का अभ्यास भी करते रिें, िर प्रकार से विी आपका एक मात्र संरक्षक िै। यि आपके आध्यास्तत्मक पथ को प्रकाचशत करता िै। आत्म-साक्षात्कार की आन्तररक ऊर्ध्वारोिण की यात्रा में मेरी िाचदपक प्राथपनाएँ आपको बल देती रिें। ईश्वर सदा सवपदा आपके साथ िैं। आपके चप्रय चनकटतम पररजन चजनके आत्मोत्थान के चलए भगवान ने आपको कुछ समय के चलए धरती पर भेजा िै, उन सबको मेरे प्रेम भाव, आदर तथा अनेकानेक मंगलकामनाओं ंसचित पत्र लेखन समाप्त करता हाँ। ॐ नमः चशवाय।।"

ॐ

" आपके पत्र के साथ अनुपम उपिार प्राप्त कर मिान िषप हुआ। समुचित स्थान, समुचित समय पर समुपयोगी सुचनचित राचश; सवप प्रकारेण ये सब मेरे चलए अत्यन्त चवस्मयजनक और अथपगचभपत रिा। अपनी इस अयोग्य सन्तान की पग-पग पर सम्हाल रखते हुए भगवान अपना परमचपता परमात्मा िोना प्रमाचणत करते िैं। यि उनका अपनी सन्तान के प्रचत वात्सल्य का द्योतक िै। वे चजतना िमारा ध्यान रखते िैं िम तो उसका शतांश भी निीं ंसमझ सकते। यथोचित समय पर उनका कृपा-वषपण मेरे चलए अत्यन्त मित्त्व रखता िै।"

ॐ

एक चनष्ठावान आध्यास्तत्मक साधक को ईश्वरेच्छा िी सवोपरर मानकर अपना प्रत्येक कदम आगे की ओर बढ़ाना िोता िै। िो मागप में आने वाली चकतनी िी कचठनाइयों–कष्टों–दुचवधाओं–बाधाओं का उसे सामना करना पड़े परन्तु
असीम सिनशस्क्त, सचिष्णुता, सिनशीलता से अप्रचतकारपूवपक सब सिना िोचिए। ऐसा बोध िोने पर वि शाश्वत आनन्द तथा आस्तत्मक शास्तन्त का चनत्य अनुभव कर सकता िै।”





No child of
God is _unworthy_
The very fact
that one is a
child of God
makes one worthy.

I love you and want
you to be happy, hence I say these
truths unto you again and again.
My one wish is that you should
find the peace and the **joy** that is
within _and is nowhere **else**!_ upon all
this earth. You _must_ experience It. **Now**!

God has given you your Guru. Do not
search for Guru any more.
Move towards God Within!

Yours in the Divine
Swami Chidananda
ॐ

चशरिी तीथप-संस्मरण

दचक्षण भारत के मिास शिर में व्यतीत अपने पूवापश्रम-जीवन को अलचवदा किते हुए वषप १९४३ में सुदूर अज्ञात गााँव चशरिी में, जो परम पूज्य श्री श्री साईं बाबा का स्थान िै, मैं था। उनके पूज्य चदव्य िरणों ंमें मेरा कोचट-कोचट साष्टांग दण्डवत प्रणाम !

िालीसवें दशक के प्रारस्तम्भक वषों में, मैं उत्तर भारत के ऋचषकेश में परम आराधनीय सद ्गुरुदेव श्री स्वामी चशवानन्द जी मिाराज के चशवानन्द आश्रम में स्थायी रूप से चनवचसत िो गया। यथाथपतः, मैं गुरुदेव के श्रीिरणों ंमें वषप १९ मई १९४३ की बुद्धपूचणपमा के पावन चदवस पर पहुाँिा। उस समय मैं २७ वषीय नवयुवक था। मैंने अपने घर का ६ मिाप १९४३ को त्याग चकया और चतरुमला- चतरुपचत जा कर मिान प्रभु श्री श्री वेंकटेश्वर भगवान के दशपन चकये। प्रभु के अिपकों ंकी कृपापूणप सिायता से मैं उस पचवत्र पिाड़ी पर दस चदनों ंतक रिा। उस अवचध में, मैं िर २४ घण्टे में अनेकों ंबार श्री वेंकटेश्वर भगवान के दशपन चकया करता था।

मेरा अगला गन्तव्य स्थान पचवत्र ग्राम चशरिी था। मैंने दौंि तक की यात्रा रेल से की। दौंि रेलवे स्टेशन से रेल की एक छोटी यात्रा चितले तक की, जो दौंि और मनमाि के बीि िै। चितले से मैं चशरिी आया। मैं पूरे एक माि तक चशरिी में रिा। विााँ बहुत कम लोग रिते थे। चशरिी साईं बाबा मस्तन्दर के कायापलय में काम कर रिे एक सज्जन श्री गोचवन्द राव कुलकणी ने देखा चक मैं एक चशचक्षत व्यस्ति हाँ एवं अंग्रेजी अच्छी तरि पढ़ और चलख सकता हाँ। यि जान कर चक मैं एक मिाराष्टरीय पररवार का हाँ, चजसकी मातृभाषा मराठी िै, श्री गोचवन्द राव कुलकणी ने मुझसे उन्ें उनके कायापलय के काम में मदद के चलए अनुरोध चकया। मैंने इसे सिषप स्वीकार चकया।

उन्ोंने मुझे िावड़ी और िावड़ी के बगल में स्तस्थत सुसंग्रिीत पुस्तकालय में झाड़ू लगाने एवं धूल की सफाई करने को भी किा। मैं एक झाड़ू लाया और चकसी प्रकार िावड़ी में झाड़ू लगाया और सफाई की। लेचकन जब मैंने पुस्तकालय में प्रवेश चकया, तो मुझे जीवन का भारी झटका लगा। फशप आधा ईंि सूक्ष्म धूचल से ढका था। विााँ अनेकों ंपुस्तकें थीं, ं पर सभी धूल से ढकी थीं। ं िर ओर मकड़ी के जाले झूल रिे थे। एक कोने में कुछ पुराने अखबार पड़े थे। कुछ क्षणों ंके चलए मैंने सोिा चक यि कायप असम्भव िै, लेचकन चफर साईं बाबा की याद ने मिसूस कराया चक यचद मैं यि काम निीं ंकरता हाँ, तो मैं बाबा जी की अनमोल और चवलक्षण सेवा से वंचित रि जाऊाँगा। इसचलए मैंने एक बड़ा-सा रूमाल अपने नाक और मुाँि पर लपेटा और उसके दो छोरों ंको सर के पीछे सख्ती से बााँधा। पूरे दो चदन तक मैंने धूल की मोटी परत को झाड़ा, पुराने अखबारों ंमें उसे उठाया, पुस्तकालय से बािर आया और दूर जा कर धीरे से धूल को खुले मैदान के एक छोटे-से चिस्से में िाल चदया। पुस्तकालय के मूल फशप को देख पाने में मुझे पूरे दो चदन लग गए। चफर प्रत्येक पुस्तक को पुस्तकालय की अलमारी से बािर चनकाल कर उसकी धूल झाड़ कर, अलमारी की सफाई कर, वाचपस यथास्थान रखा और चफर बास्तियों ंमें पानी ला कर फशप की धुलाई कर दी। श्री गोचवन्द राव कुलकणी मेरी सेवा से इतने प्रसन्न हुए चक उन्ोंने मुझे बुलाया और समाचध-भवन से सटे दोनों ंओर के कमरों ंमें से एक कमरे की िाबी मुझे दे दी। अप्रैल-मई १९४३ के लगभग मैं विााँ पूरे एक मिीने तक रिा।

पूज्य बाबा जी की समाचध के ठीक पीछे स्तस्थत कुएाँ (बावड़ी) के ठण्ढे पानी से मैं चनत्य स्नान करता था। मैं एक गागर में रस्सी बांध कर जल चनकालता था और उसे अपने चसर पर िाल देता था। मैं बाबा जी की तीनों ंआरचतयों ंमें उपस्तस्थत रिता और आरती के साथ मराठी-पाठ में भाग लेता था। उनमें से कुछ मध्याह्न-पाठ पूज्य श्री दासगणु जी मिाराज द्वारा रचित थे। श्री चवठ्ठल राव नाम का एक भि सवैतचनक गायक-कमपिारी था जो सभी भजन तीनों ं आरचतयों ंमें, तीन अलग-अलग समय पर जैसे प्रातः, मध्याह्न एवं राचत्र में गाया करता था। वि प्रातः काकड़ आरती,

मध्याह्न भोग आरती, एवं राचत्र शेज आरती गाया करता था। मेरे उस प्रवास-काल में, १९४३ के उस छोटे चशरिी के कोने-कोने को मैं जान गया था। यि मेरा सौभाग्य था चक मैं साईंबाबा के सिर अबुदुल्ला बाबा से चमला।



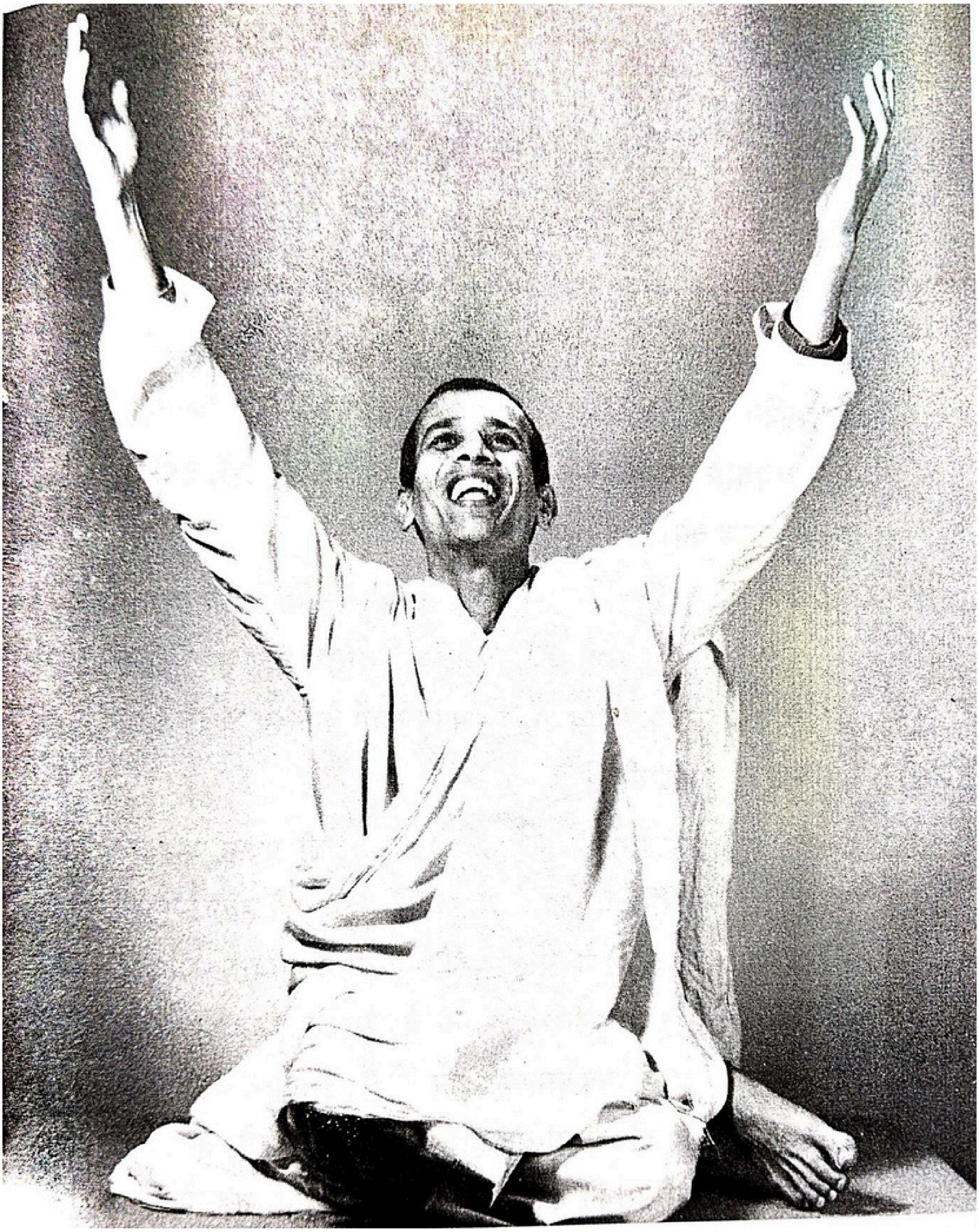
उसके बाद रामनवमी का त्यिौार आया। साईं बाबा की जय ! साईं राम मिाराज की जय ! इस प्रकार जयकार
करते हुए सैकड़ों ं लोग कोपरगााँव आचद स्थानों ं से दो बड़े जल-पात्रों ं में पचवत्र गोदाबरी का जल-भरा कावड़ लेकर,
कोपरगााँव से १४ मील की यात्रा करते हुए आये। कावड़ का वि जल, बड़े भस्ति के साथ साईं बाबा की समाचध पर ढ़िाया गया। ईश्वर िी जानते िैं चक उस पचवत्र श्री रामनवमी के पुनीत अवसर पर कावचड़यों ं में भरे चकतने जल से बाबा जी का अचभषेक हुआ ! उसी चदन में पिली बार श्री दासगणु मिाराज का दशपन कर सका। अगले चदन गोपाल काला था। इसके बाद मैंने चशरिी से चवदा ली तथा उत्तर में वृन्दावन और मथुरा की ओर बढ़ िला। श्री दासगणु मिाराज, जो समाचध-मस्तन्दर के एक दरवाजे की सीचढ़यों ं पर बैठे थे, चवदा से पूवप उन्ोंनें मुझे बुलाया और उन्ें जब यि ज्ञात हुआ चक मैं एक जनेऊधारी ब्राह्मण हाँ तो उन्ोंनें मुझे धोती, पान- सुपारी और एक नाररयल भेंट चकया। यि मेरा अचत प्रारस्तम्भक अनुभव था।
उसके पिात, अभी िार-पााँि विषों के पूवप मैंने चशरिी की यात्रा की। वि इतना चवशाल िो गया िै चक मैं उस स्थान को पििान न सका। चजस चदन मैंने यि यात्रा की, उस चदन गुरुवार था और मुम्बई, ठाणे, नाचसक आचद से भि उमड़े पड़ रिे थे। वे िजारों ं की संख्या में थे। परन्तु चफर भी भारी संख्या में आये भिों ं को लिो की रेचलंग के बीि शास्तन्तपूवपक पंस्ति-बद्ध करने की व्यवस्था भी अत्यन्त उत्तकृष्ट थी।



समापन से पूवप मैं आप सबको यि सूचित करना िाहाँगा चक चशरिी साईं बाबा के एक प्रगाढ़ भि मुझे चनयचमत रूप से द्वारका माई की धूनी से ताजा उदी भेजते रिते िैं। इसमें से थोड़ी मैं अपने ललाट पर लगाता हाँ, थोड़ी-सी अपनी जीभ पर रखता हाँ और शेष मेरे तचकए के नीि रखी जाती िै, वि अभी भी विााँ िै। साईं नाथ मिाराज की जय !

साईंनाथ भगवान और सद ्गुरु भगवान श्री स्वामी चशवानन्द जी मिाराज के िरणों ंका सेवक,

चिदानन्द हाँ ।। ॐ



मैं जो समझ सका हाँ, वि ि चक मैं इस धरती पर परमात्मा द्वारा सोदे्देश्य भेजा गया हाँ। वि उदे्देश्य चवशेष यिी ि- पर पीड़ा को सुनना, समझना, ध्यान देना तथा उसके चनवारण के चलए यथासम्भव, यथाशस्ति, यथासामथ्य, यथास्थान

तथा यथासमय जीवन के अस्तन्तम श्वास तक प्रयत्न करते रिना िै। जिाँ सम्भव निीं, ं विाँ 'िरर इच्छा' समझ कर शान्त रिना िै।

भले िी आप या अन्य सैकड़ों ंव्यस्ति चकसी भी कायप के दाचयत्व लेने या न लेने पर आक्षेप करते रिें। यथाथप सत्य तो यि िै चक इस संसार में प्रत्येक मानव अपने-अपने कमों के चलए उचित रूप से वि स्वयं िी उत्तरदायी िै।

जिाँ तक मेरा प्रश्न िै, मेरे ऊपर चकसी प्रकार का कोई दाचयत्व निीं, ं क्योंचंक मैं चकसी भी कायप में चलप्त निीं ंिोता। चनचलपप्त भाव से कायप करता हाँ। मैं अकताप हाँ। इसचलए मैं दाचयत्व-रचित हाँ। देखने में यि बात मामूली सी लगती िै, सत्यतः मेरा यि सन्देश चविारणीय िै। अगर आप इस पर ध्यान देते िैं; इस तथ् को ध्यान में रखते िैं, तो आप िी लाभास्तित िोंगें। अगर निीं ंकरते, तो स्वामी चिदानन्द के ऊपर इसकी कोई प्रचतचक्रया निीं ंिोगी। वि तो इससे अप्रभाचवत िी रिेंगे।

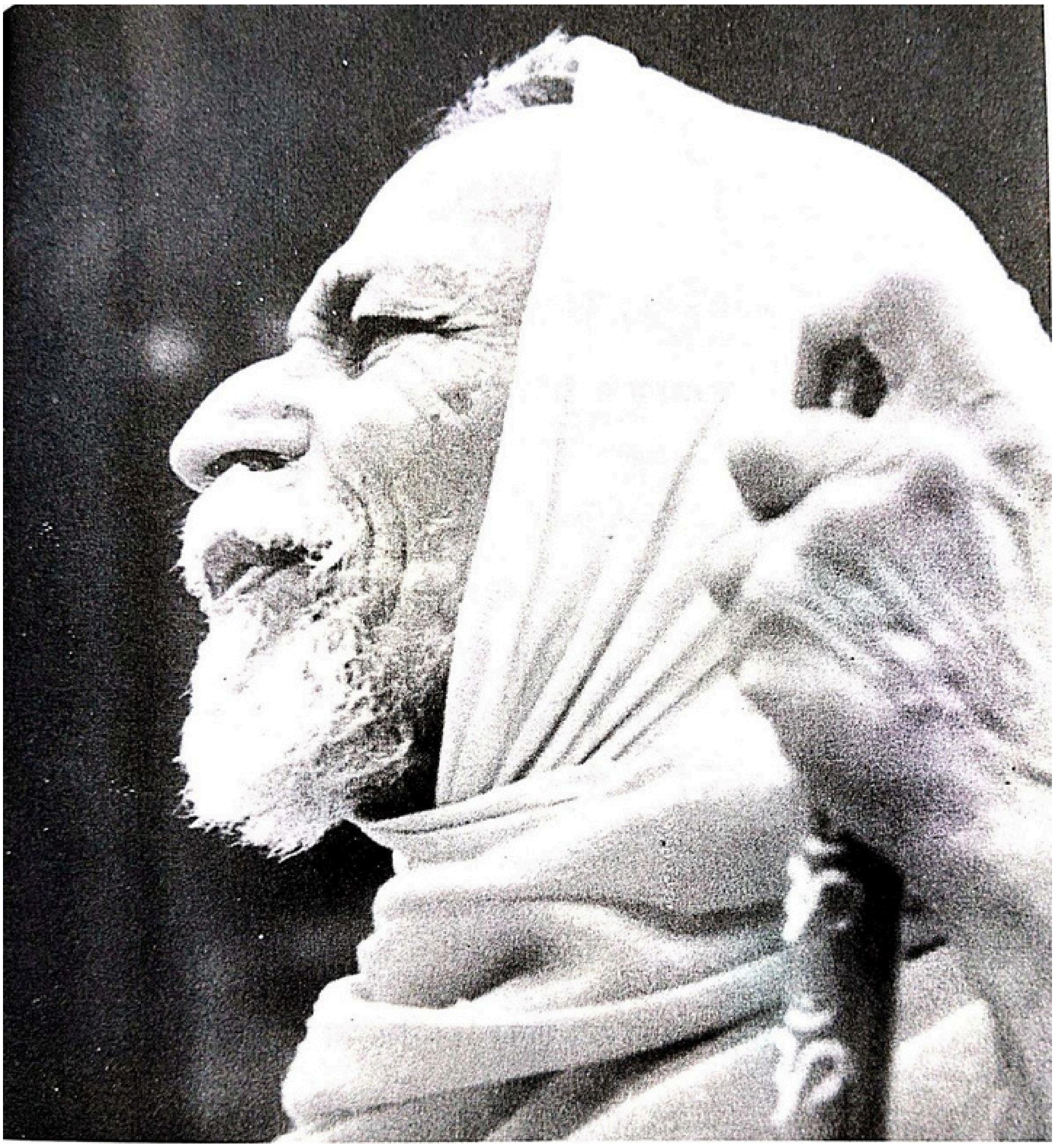


ॐ

समिु में नमक की िली िालने पर वि उसमें घुलकर सागर के साथ एकरूप िोकर सागर िी िो जाती िै। उसका अस्तस्तत्व लुप्त प्रायः न िोकर चवशाल िो जाता िै। इसी प्रकार आत्म-साक्षात्कार प्राप्त सन्त ईश्वर के साथ तादात्म्य स्थाचपत कर लेते िैं, एक िो जाते िैं। उनमें ईश्वरता समाचित िो जाती िै। वे मिान िो जाते िैं।

एक प्रबुद्ध मिात्मा के चलए चवरोधाभासी स्तस्थचत िो जाती िै। जब उन्ें शाश्वत सत्य का बोध िो जाता िै, तो उनके चलए भूत, वतपमान, भचवष्य अथप िी निीं ंरखते, सब अभी और यिीं ंका रूप ले लेते िैं, यिी यथाथप सत्य िै। अतीत की सूमृचत का कोई प्रश्न िी निीं ंरिता। वतपमान िी उनके चलए मित्त्वपूणप िो जाता िै। चद्वतीयतः, पूवप जन्मों ंके चवषय में सोचने की कोई अचनवायपता निीं,ं पूवप जन्म सब मायाजचनत भ्रास्तन्त िै चजसका कभी कोई अस्तस्तत्व िी न था।

ॐ



ॐ

आत्म-बोध, आत्माकी आन्तरिक यात्रा है।
डजसमें न आिम्भ है, न डविाम ।

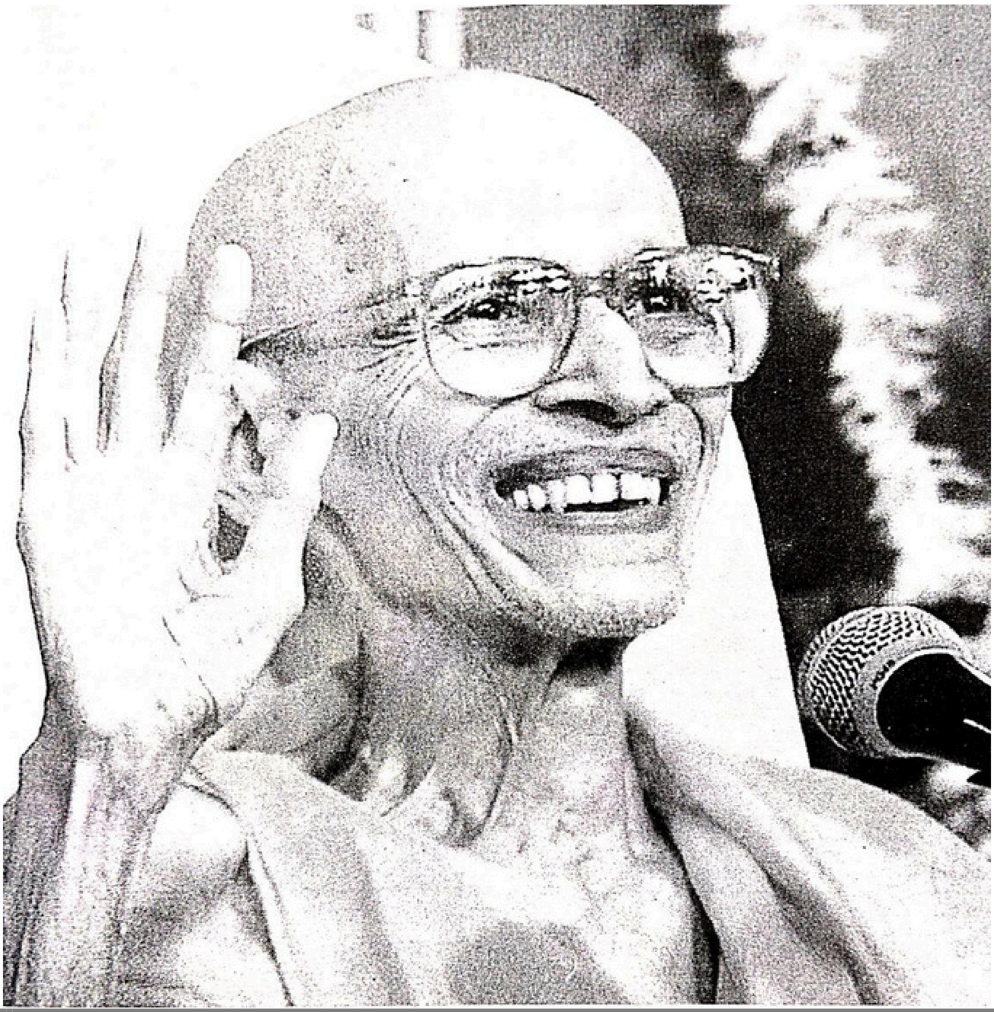
यह आत्म-जाग्रडत का पर् है,
जो चेष्टाि–डहत, डियाडहत है मूक।

पिमात्मा की सविव्यापकता की
सजगता की िमानुसिा प्रगडत है,

पग-पग आगे बढ़ना है।

प्रािम्भ में यह मन्द ज्योडत सम है,

जब तक प्रोज्वल रूप लेकि यह तेजोमय हो जाए,
तब तक यह धीिे-धीिे प्रदीप्त होती िहती है।



ॐ

ॐ-ॐ-ॐ- मैं सत् डचत् आनन्द हूँ।

ॐ-ॐ-ॐ - मैं सीमा िडहत असीमता हूँ।

ॐ-ॐ-ॐ- मैं कालि-डहत अनन्तता हूँ।

ॐ-ॐ-ॐ

मैं चेतना की चौर्ी अवस्र्ा र्तुीयावस्र्ा हूँ,

जाग्रत-स्वप्न ओौ डनद्रावस्र्ा का साक्षी हूँ।

मैं अवस्र्ा त्रय से पिे हूँ।

न सोना है, न जागना,

सदा सवित्र िहने वाला,

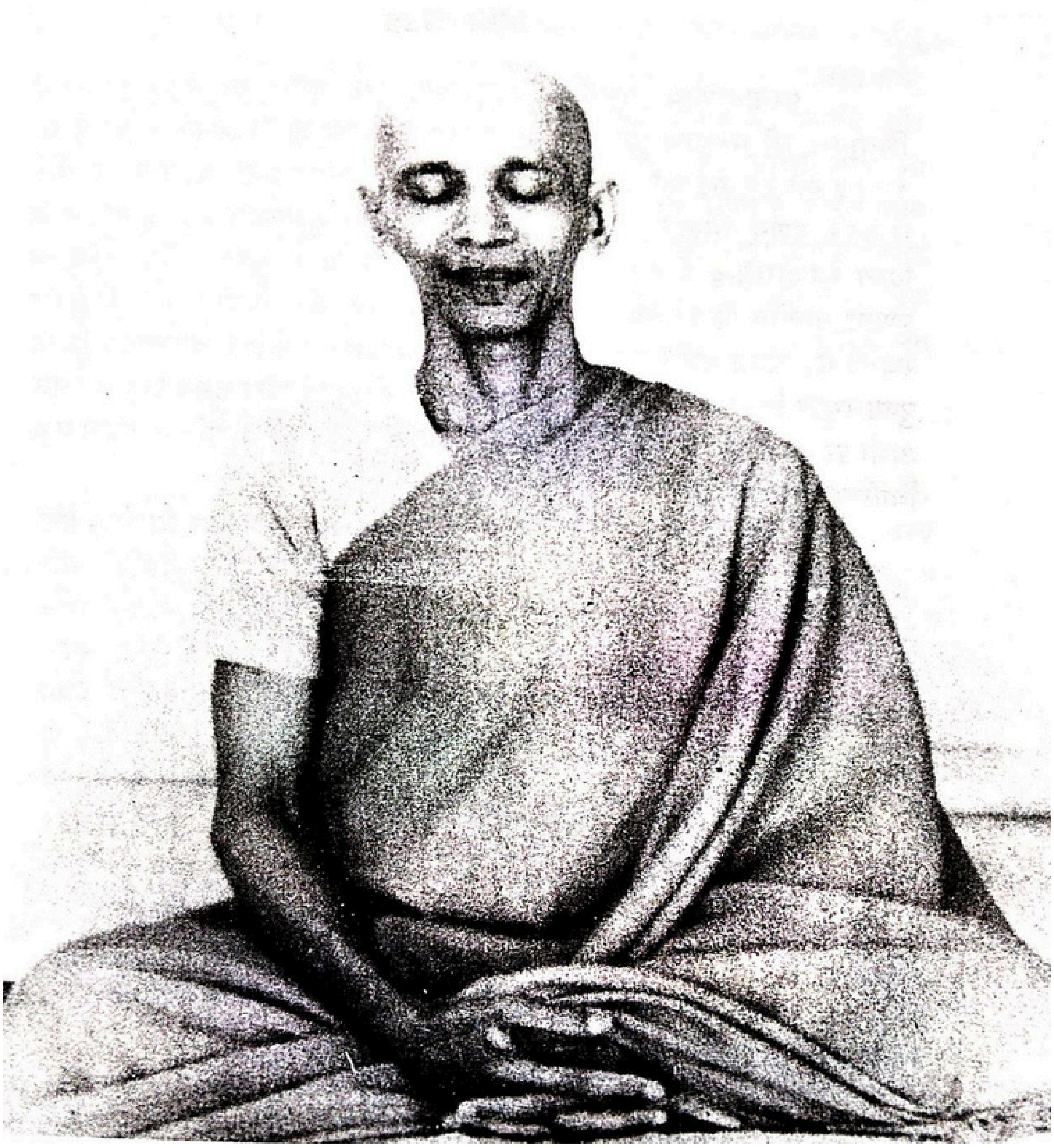
मैं हूँ आत्म-तत्त्व।

मैं आत्म-तत्त्व ही हूँ ।

जाग्रडत मेिी सत्ता है,

आत्म-जाग्रडत का परिचायक हूँ।

आत्म-बोध है मेिा परिचय।
यही है आत्म-डचन्तन ।



आनन्दोऽ

परमादरणीय, परमचप्रय, श्रद्धास्पद, परम पावन सद्गुरुदेव श्री स्वामी चशवानन्द जी मिाराज का एक सौभाग्यशाली चशष्य हाँ मैं। अपने जीवन में सन १९४३ की १९ मई को पूणपिन्द्र की अलौचकक अनुपम छटा-यिु सान्ध्य बेला में उनके दशपन-चमलन का आनन्दप्रद चिराकांचक्षत शुभावसर प्राप्त हुआ। उनके चदव्य िरणारचवन्द में नतमस्तक िो, सवप समपपण भाव-यिु साष्टांग दण्डवत प्रणाम समचपपत चकये। वि वैशाख मास की पूचणपमा थी; जो बोध गया की पुनीत स्थली में, पचवत्र बोचध वृक्ष की छत्रछाया में भगवान बुद्ध द्वारा बुद्धत्व-प्रास्तप्त के पुण्य सूमृचत चदवस के रूप में मनायी जाती िै। उस अपूवप आनन्दमय क्षण से आज अभी इस क्षण तक मैं विी हाँ, सद्गुरुदेव के परम पुनीत श्री रिणों ंका केवल एक चवनीत दास, एक सेवक।

उन्िोंने िमें चजस जीवन-शैली का प्रचशक्षण चदया, िमारे चलए जो मागप प्रशस्त चकया, मैं अपनी सवापचधक सामथ्ापनुसार एक आज्ञाकारी चशष्य की भाँचत िी, उसी के अनुरूप अपना जीवन यापन करता रिा हाँ। बहुचवध

रूपों ंमें गुरु- सेवा कायप का मैं यथासम्भव प्रयास करता रिा हाँ। बहुत से भिजन मुझे अपना गुरु या सद ्गुरु मानते िैं, क्योंचक वे मुझसे दीचक्षत हुए िैं। सद ्गुरु भगवान के प्रथम दशपन की मंगलमय उस धन्य घड़ी से लेकर आज अद्धप
शताब्दी-पिास वर्षों से भी अचधक समय िो गया िै। वसुतुतः, मन्त्र दीक्षा देना भी चनरन्तर गुरु-सेवा का िी एक अचभन्न अंग रिा िै। उनके साथ मेरा व्यस्तिगत प्रत्यक्ष सम्पकप सन १९४३ से सन १९६३ की जुलाई- श्री गुरुदेव की मिासमाचध चनवापण चतचथ - तक केवल बीस वषप रिा। ३५ वषप पूवप उस चदन िी वे िमारे बाह्य िमप िक्षुओं ंसे अदृश्य िो गये थे। तब से अब तक इन ५५ वषों में जो कुछ मैं रिा, अपने ऐचिक जीवन के अस्तन्तम क्षण तक विी भाव एक
आज्ञाकारी चेशष्य, सच्चे सवोप समर्पपत सेवक का भाव िी मुझमें समाहित रिा।
चिदानन्द कौन (?) बारि सौ वर्षों से भी अचधक समय पूवप जगद ्गुरु आचद शंकरािायप द्वारा प्रचतपाचदत दशनामी संन्यास-परम्परा अनुसार मुझे गुरुदेव ने संन्यास आश्रम में दीचक्षत कर 'चिदानन्द' नाम से अचभचित चकया था। अतः सब पूणपतया सुस्पष्ट िी िो जाता िै। चिदानन्द का आशय िै - चित अथापत्त िैतन्य और आनन्द। तीन पदों ंके सस्तिलन, सत -चित -आनन्द अथापत सस्तच्चदानन्द का िी यि एक अंग िै; जो परम गूढ़, परमोच्च, अनुभवातीत तथा अवैयस्तिक िै, पररपूणप िै, वैचश्वक चदव्य चसद्धान्त का द्योतक िै, अनाचद और अद्वैत सत्ता िै यि। उपचनषदों ंमें वचणपत चिचत्रत ब्रह्म यिी िै; आत्म-बोध का चवशुद्ध-चनमपल साराचतसार िै। इस प्रकार आत्मिैतन्य अवणपनीय िै, चत्रगुणातीत िै, और िै अचत सूक्ष्म। यि चकसी प्रज्ञावान प्रबुद्ध के अन्तस्तल की अतल गिराई में ज्योचतमपय अनुभूचत िै, परम प्रशास्तन्त की अवस्था िै। अपने गीता-ज्ञानोपदेश में भगवान श्री कृष्ण ने इसे अज्ञान चतचमर से परे ज्योचतयों ं की ज्योचत चनरूचपत चकया िै-

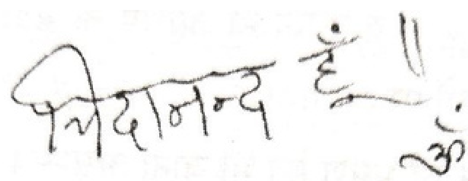
ज्योडतषामडप तज्ज्योडतस्मसः पिमुच्यते । १३-१७।।

यि अनाचद अनन्त, नाम-रूप-आकार-रचित िै, चदक्कालातीत िै, कल्पनातीत िै, चविारातीत िै, भावातीत िै तथा िै शब्दातीत। यि शाश्वत तत्त्व समय और स्थान से परे, अपररवतपनशील, चिरस्थायी, अप्रकटीकृत, चनमपल िैतन्य स्वरूप िै। यि आद्य परम सत्य िै, तत्त्वात्मक सार िै। वसुतुतः यि 'एकमेव अचद्वतीयं सत ' िै। अतः जब यि एक िै और अद्वय िै, तब चफर दूसरा कौन शेष िै जो इसका पाररभाचषक चनरूपण करेगा? और जब कोई अन्य इसका श्रवण करने वाला निीं, ं तो चकससे उसका बखान चकया जाए? अतएव यि मन, बुस्तद्ध, इस्तन्द्रयों, ं एवं सब प्रक्रमों, ं प्रचक्रयाओं ंसे परे िै। 'विीं' ं केवल 'विी' िै। अन्य कोई निीं, ं जब अन्य चकसी का अस्तस्तत्व निीं, ं तो चिदानन्द कौन? यि प्रश्न स्वतः िी शून्य में चवलय िो जाता िै। रि जाता िै अखण्ड अन्तमोन ! चिदानन्द कौन ? चवलीन िोने पर शेष रि जाती िै गिन शास्तन्त, गम्भीर नीरवता, चनःशब्दता, चनःस्पन्दता, चनस्तब्धता एवं सवोच्च प्रशास्तन्त। यिी िै पररशुद्ध चनमपल िेतनता, चित और आनन्द। विी आप भी िैं। यिी िै अपरोक्षानुभूचत।

ॐ तत सत ! ॐ शास्तन्त !

ॐ आनन्द !

आप सब चदव्य आनन्द में मि रिें। सदा सवपदा आनस्तन्दत रिें। स्वामी चिदानन्द



श्री्स्वामी्चिदानन्द

पूजनीय्गुरुदेव्श्री्स्वामी्चशवानन्द्के्योग्य्आध्यास्तत्मक्उत्तराचधकारी्श्री्स्वामी्चिदानन्द्के्चवषय्में्कि् गयिौ- "यचद्कोई्कृश्काया्के्पीछे्चछपे्आत्मवीर्को, सौम्य्रििकै्पीछे्चछपे्चनयस्तन्त्रत्हृदय्को, कमप् की्गचतशीलता्के्पीछे्चछपी्गिन्मानचसक्शास्तन्त्को्तथा्व्यस्तिगत्स्तरीय्प्रेम-पररियाप्के्पीछे्चछपी् चनवैयस्तिक्अनासस्ति्का्दशपन्करिनिा्ाति्ौ, तो्उसे्स्वामी्चिदानन्द्से्भेंट्करनिी्ाचिए।"

स्वामी्चिदानन्द्ने्दचक्षण्भारत्के्एक्समृद्ध्पररवार्में्२४चसतम्बर्१९१६्को्जन्म्चलया्था। ्प्रारम्भ्से्ी् परम्पराओं् और्कमपकाण्डों् में्उनकी्रुचि्थी। ्मिास्(िनै्नै) ्स्तस्थत्लोयोला्कालेज्के ्वे्एक्प्रचतभाशाली् चवद्यार्थी्थे। ्उन्पर्जीसस्क्राइस्ट्के्आदशों्और्उपदेशों्की्बहुत्गिरी्छाप्पड़ी। ्उन्होंने्चिन्दू-संसूकृचत् के्तत्त्वों्के्साथ्उनका्समिय्कर्चलया। ्श्री्रामकृष्ण्परमिंस्देव्तथा्अपने्गुरुदेव्श्री्स्वामी्चशवानन्द्से् वे्अत्यचधक्प्रभाचवत्रिे। ्वषप्१९४३्में्वे्गुरुदेव्की्शरण्में्आ्गये। ्तबसे्उनके्गुरुदेव्का्आश्रम्उनका् घर्बन्गया्तथा्द्चिवाइन्लाइफ्सोसायटी्के्मिान ्आदशप्उनके्सेवा-कायों्की्आधारचशला्बन्गये्। प्रारम्भ् से् िि् स्वामी् चिदानन्द् में् रोचगयों् और् दु: खी् व्यस्तियों् की् सेवा् करने् का् अतीव् उत्सिा् था। ् अपनी् बाल्यावस्था्में्उन्होंने्अपने्घर्के्लॉन्में्कुचष्ठयों्के्चलए्झोपचड़याँ्चनचमपत्करवा्दी्थीं्और्उन्हें्देव-तुल्य् मान्कर्वे्उनकी्पररियाप्चकया्करते्थे।

अपने्आध्यास्तत्मक्पुत्र्तथा्चप्रय्चशष्य्स्वामी्चिदानन्द्के्चवषय्में्स्वामी्चशवानन्द्ने्कि्था- "चिदानन्द् जीवन्मुि, मिान ्सन्त, आदशप्योगी्तथा्परा्भिि्िैं। ्इसके्अचतररि्भी्वे्बहुत्कुछ्िैं। ्अपने्चपछले्जन्म् में्वे्एक्मिान ्योगी्तथा्सन्त्थे। ्उनके्प्रविन्उनके्पचवत्र्हृदय्के्भावोद ्गार्तथा्उनकी्प्राचतभज्ञानात्मक् प्रज्ञा्के्प्रकटीकरण्िैं। ्वे्एक्व्याविाररक्वेदान्ती्िैं। ्उनके्शब्दों्में्अद भुत्प्रभावक्शस्ति्िै। ्एक्मिान् चमशन्को्पूरा्करने्के्चलए्उन्होंने्जन्म्चलया्िै।"

एक्उत्कृष्ट्संन्यासी्के्रूप्में्आध्यास्तत्मक्गुम्बिकत्व्के्गुण्के्धनी्स्वामी्जी्अनचगनत्व्यस्तियों्के्चप्रयपात्र् बन्गये्तथा्संसार-भर्में्चदव्य्जीवन्के्मिान ्आदशों्के्पुनरुज्जीवन्के्चलए्सभी्चदशाओं्में्कचठन् पररश्रम्करते-करते्अन्तत:२८्अगस्त्२००८्को्ब्रह्मलीन्िो्गये।

A DIVINE LIFE SOCIETY PUBLICATION

HC 07 85/-